श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(सचित्र)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेंकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उक्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Ceṭika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ - ૧૦

ચરણાનુયોગમય પ્રશ્નવ્યાકરણાંગ સૂત્ર - ૧૦

અન્ય નામ :- પણ્હાવાગરણ

શ્રુતસ્કંધ ---------- ૨
અધ્યયન ---------- ૧૦
ઉદ્દેશક ---------- ૧૦
પદ ----------૯૨,૧૬,૦૦૦

ઉપલબ્ધ પાઠ ----------૨૩૦૦ શ્લોક પ્રમાણ
ગદ્યસૂત્ર ----------૩૦
પદ્યસૂત્ર ---------- ૯

આશ્રવ શ્રુતસ્કંધ		સંવર શ્રુતસ્કંધ	
અધ્યયન -----	૫	અધ્યયન -----	૫
ઉદ્દેશક -----	૫	ઉદ્દેશક -----	૫
સૂત્ર -----	૨૦	સૂત્ર -----	૧૦
ગાથા -----	૩	ગાથા -----	૯

(૧) આશ્રવ શ્રુતસ્કંધ

(૧) અધ્યયન : પ્રાણાતિપાત

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં નમસ્કારમંત્ર આપીને આશ્રવ અને સંવરના વર્ણન હેઠળ પાંચ પ્રકારના આશ્રવ, પ્રાણાતિપાતના પાંચ વિભાગ અને ૩૦ નામ, વિવિધ પ્રકારના જીવોની હિંસા, તેનું પ્રયોજન અને ફળ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે હિંસાને અધર્મના પ્રથમ દ્વાર કહી ઉપસંહાર કર્યો છે.

(૨) અધ્યયન : મૃષાવાદ

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં મૃષાવાદ (જૂઠું બોલવું તે) નું સ્વરૂપ અને તેના ૩૦ નામ, ચાર પ્રકારના મુખ્ય મૃષાવાદ, મૃષાવાદીની દુર્ગતિ વગેરે વર્ણન પછી અંતે મૃષાવાદને અધર્મનું બીજું દ્વાર ગણાવ્યું છે.

(૩) અધ્યયન : અદત્તાદાન

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં અદત્તાદાન (ચોરી)ના ૩૦ નામ, ચોરી કરનારાઓ, ચોરીનું ફળ, ભયંકર વેદનાઓ વગેરે વર્ણન કરી અંતે અદત્તાદાન - ચોરીને અધર્મના ત્રીજા દ્વાર તરીકે ગણાવ્યું છે.

(૪) અધ્યયન : અ-બ્રહ્મચર્ય

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં અ-બ્રહ્મચર્ય (મૈથુન)નું સ્વરૂપ, તેના ૩૦ નામ અને અબ્રહ્મચર્ય સંબંધી દેવતાઓ, ચક્રવર્તીઓ, વાસુદેવો, માંડલિક રાજાઓ, દેવકુરુવાસીઓ અને ઉત્તરકુરુવાસીઓ વગેરેનું વર્ણન અને મૈથુનનું ફળ જણાવી તેને અધર્મના ચોથા દ્વાર તરીકે ગણાવ્યું છે.

(૫) અધ્યયન : પરિગ્રહ

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં પરિગ્રહનું સ્વરૂપ, તેના ૩૦ નામ, પરિગ્રહ-સંગ્રહ વૃત્તિવાળા જીવો અને પરિગ્રહનું ફળ બતાવીને અંતે તેને અધર્મના પાંચમાં દ્વાર તરીકે ગણાવ્યું છે.

(૨) સંવર શ્રુતસ્કંધ

(૧) અધ્યયન : અહિંસા

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં પાંચ સંવરોના વર્ણનની પ્રતિજ્ઞા કરીને તેના પાંચ નામ અને પરિચય આપીને સર્વપ્રથમ અહિંસાના ૬૦ નામ, તેની ઉપમા, અહિંસા આચરનારાના કર્તવ્ય વગેરે આપીને અહિંસાનુ સ્વરૂપ, પાંચ મહાભાવનાઓ તેમજ સાધકનું અપ્રમત્ત જીવન વર્ણવીને અંતે અહિંસાને સંવરનું પ્રથમ દ્વાર કહ્યું છે.

(૨) અધ્યયન : સત્ય

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં સત્યનું સ્વરૂપ, પ્રભાવ, ૧૦ પ્રકાર તેમજ તેની કેટલીક ઉપમાઓ, સત્યના બે પાસાંઓ - અવક્તવ્ય અને પ્રશસ્ત, ૧૨ પ્રકારની ભાષા, ૧૬ પ્રકારના વચન, સત્યની પાંચ ભાવના, અસત્યના પાંચ કારણ વગેરે વર્ણન કરી અંતે સત્યને સંવરના બીજા દ્વાર તરીકે બતાવ્યું છે.

(૩) અધ્યયન : અસ્તેય

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં દાનમાં આપેલું અને અનુજ્ઞા (પરવાનગી) થી મેળવેલું એમ બે પ્રકારના અસ્તેય (ચોરી ન કરવી) નું સ્વરૂપ, તેના વિરાધકો અને આરાધકો, અને પાંચ ભાવનાઓ આપીને અસ્તેયને સંવરના ત્રીજા દ્વાર તરીકે ગણાવ્યું છે.

(૪) અધ્યયન : બ્રહ્મચર્ય

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં બ્રહ્મચર્યનું સ્વરૂપ અને પ્રભાવ, તેની ઉપમાઓ, બ્રહ્મચારીના કર્તવ્ય-અકર્તવ્ય અને કૃત્ય-અકૃત્ય તેમજ તેની પાંચ ભાવનાઓ આપીને અંતે બ્રહ્મચર્યને સંવરનું ચોથું દ્વાર કહ્યું છે.

(૫) અધ્યયન : અપરિગ્રહ

આ અધ્યયનના એક ઉદ્દેશકમાં પરિગ્રહ (સંગ્રહ કરવો એ) ના સ્વરૂપ વગેરે વર્ણવીને સંવરવૃક્ષનું રૂપક, પરિગ્રહ વિરત - અપરિગ્રહીના કાર્ય-અકાર્ય, શુદ્ધનિર્દોષ ભિક્ષાગ્રહણનું વિધાન, ઔષધ વગેરેનો પણ અપરિગ્રહ, ધર્મસાધના ઉપયોગી સાધનના પરિગ્રહનું વિધાન, પાંચ સમિતિ, ત્રણ ગુપ્તિ, અપરિગ્રહની પાંચ ભાવના વગેરે જણાવીને અંતે અપરિગ્રહને સવરનું પાંચમું દ્વાર ગણાવ્યું છે.

सिरि उसाहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदय पास णगहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स। सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो। **卐卐卐 श्रीप्रश्नव्याकरणदशाङ्गम्- 卐卐卐** जंबू। 'इणमो अण्हयसंवरविणिच्छयं पवयणस्स निस्संदं। वोच्छामि णिच्छयत्थं सुहासियत्थं महेसीहिं॥ १॥ (तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था, पुण्णमद्दे चेइए वणसंडे असोगवरपायवे पुढवीसिलापट्टए, तत्थ णं चंपाए नगरीए कोणिए नाम राया होत्था, धारिणी देवी, तेणं कालेणं० समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नाम थेरे जाइसंपन्ने कुलसंपन्ने बलसंपन्ने रूवसंपन्ने विणयसंपन्ने णाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने लज्जासंपन्ने लाघवसंपन्ने ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे जियनिद्दे जियइंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जापहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे णाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नगरी तेणेव उवागच्छइ जाव अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तेणं कालेणं० अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबूनामं अणगारे कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्तविपुलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामन्ते उडढंजाणू जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं से अज्जजंबू जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसद्धे० संजायसद्धे० समुप्पन्नसद्धे० उट्ठाए उट्ठेइ त्ता जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ त्ता अज्जसुहम्मं थेरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ त्ता वंदइ नमंसइ त्ता नच्चासन्ने नाइदूरे विणएणं पंजलिपुडे पज्जुवासमाणे एवं व०-जइ णं भंते ! समणेणं भगवयामहावीरेणं जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोववाइयदसाणं अयमट्ठे पं० दसमस्स णं भंते ! अंगस्स पण्हावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पं० ?. जंबू ! दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव संपत्तेणं दो सुयक्खंधा पं०- आसवदारा य संवरदारा य, पढमस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पं० ?. जम्बू ! पढमस्स णं सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं पंच अज्झयणा पं०, दोच्चस्स णं भंते ! ० एवं चेव, एएसिं णं भंते ! अण्हयसंवराणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पं०?, तते णं अज्जसुहम्मे थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे जंबूं अणगारं एवं व०-पा०) 'पंचविहो पण्णत्तो जिणेहिं. इह अण्हओ अणादीओ। हिंसा मोसमदत्तं अब्बंभ परिग्गहं चेव॥२॥जारिसओ १ जंनामा २ जह य कओ ३ जारिसं फलं देति ४। जेविय करेंति पावा पाणवहं ५ तं निसामेह॥३॥ पाणवहो नाम एस निच्चं ज़िणेहिं भणिओ-पावो चंडो रुद्दो खुद्दो साहसिओ अणारिओ णिग्घिणो णिस्संसो महब्भओ पइभओ १० अतिभओ बीहणओ तासणओ अणज्जो उव्वेयणओ य णिरवयक्खो णिद्धम्मो णिप्पिवासो णिक्कलुणो निरयवासगमणनिधणो २० मोहमहब्भयपयट्टओ मरणावेमणस्सो २२ ☆☆☆। **पढमं अधम्मदारं।**☆☆☆ १। तस्स य नामाणि इमाणि गोण्णाणि होंति तीसं, तं०-पाणवहं उम्मूलणा सरीराओ अवीसंभो हिंसविहिंसा तहा अकिच्चं च घायणा मारणा य वहणा उद्दवणा तिवायणा य १० आरंभसमारंभो आउयकम्मस्सुवद्दवो भेयणिट्ठवणगालणा य संवट्टगसंखेवो मच्चू असंजमो कडगमद्दणं वोरमणं परभवसंकामकारओ दुग्गतिप्पवाओ पावकोवो य पावलोभो २० छविच्छेओ जीवियंतकरणो भयंकरो अणकरो य वज्जो परितावणअण्हओ विसाणो निज्जवणा लुंपणा गुणाणं विराहणत्ति ३० विय तस्स एवमादीणि णामधेज्जाणि होंति तीसं पाणवहस्स कलुसस्स कडुयफलदेसगाइं।२। तं च पुण करेंति केई पावा अस्संजया अविरया अणिहुयपरिणामदुप्पयोगी पाणवहं भयंकरं बहुविहं बहुप्पगारं परदुक्खुप्पायणप्पसत्ता इमेहिं तसथावरेहिं जीवेहिं पडिणिविट्ठा, किं ते ?, पाढीणतिमितिमिंगिलअणेगझसविविहजातिमंडुक्कदुविहकच्छभणक्कमगरदुविहगाहादिलिवेढयमंदुयसीमागा-रपुलुयसुंसुमारबहुप्पगारजलयरविहाणाकते य एवमादी कुरंगरुरुसरभचमरसंबरउरब्भससयपसयगोण-सरोहियहयगयखरकरभखग्गवानरगव-

सौजन्य :- प. पू. साध्वीश्री धैर्यप्रभाश्रीजीना शिष्या प.पू. साध्वीश्री गुणमालाश्रीजी ना शिष्या प.पू. साध्वीश्री हितप्रभाजी नी प्रेरणाथी
मुलुन्ड (पूर्व) अचलगच्छ जैन संघ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यविगसियालकोलमज्जारकोल(क पा०)- सुणकसिरियंदलगावत्त-कोकंतियगोकण्णमियमहिसविग्घछगलदीवियासा-णतरच्छअच्छभल्लसद्दूलसी-हचिल्ललचउप्पयविहाणाकए य एवमादी अयगरगोणसवराहिम-उलिकाओदरदब्भपुप्फयासालियमहोरगोरगविहाणकए य एवमादी छीरलसरंबसेहसेल्लगगोधुंदरणउलसरडजाहगमुगुंसखाडहिलवाउपइयघीरोलियसिरीसिवगणे य एवमादी कादंबकबकबलाकासारसआडासेतीकुलल-वंजुलपारिप्पवकीवसउणदीविय(पीलिय)हंसधत्तरिट्ठगभासकुलीको-सकुंचदगतुंडढेणियालगसूयीमुहकविलपिंग- लक्खगकारंडगचक्कवाग-उक्कोसगरुलपिंगुलसुयबरहिण-मयणसालनंदीमुहनंदमाणगकोरंगभिंगारगकोणाल-गजीवजीवकतित्तिरवट्टकलावककपिंजलककवोतकपारेवयगचिडिग (प्र० वडग) ढिंककुक्कुडवेसरमयूरगचउरगहयपोंडरीयसालाग (करक पा०) वीरल्लसेणवायसयविहंगभि (प्र० से) णासिचासवग्गुलिचम्मट्ठिलविततपक्खिखहयरविहाणाकते य एवमायी जलथलखगचारिणो उ पंचिंदिए पसुगणे बियतियचउरिंदिए य विविहे जीवे पियजीविए मरणदुक्खपडिकूले वराए हणंति बहुसंकिलिट्ठकम्मा, इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, किं ते ?, चम्मवसामंसमेयसोणियजगफिप्फिसमत्थुलुंगहितयंतपित्तफोफसदंतट्ठा अट्ठिमिंजनहनयणकण्णण्हारुणिनक्कधमणिसिंगदाढिपिच्छविसविसाणवालहेउं, हिंसंति य भमरमधुकरिगणे रसेसु गिद्धा तहेव तेंदिए सरीरोवकरणट्ठयाए किवणे बेंदिए बहवे वत्थोहारपरिमंडणट्ठा, अण्णेहिं एवमाइएहिं बहुहिं कारणसतेहिं अबुहा इह हिंसंति तसे पाणे इमे य एगिंदिए बहवे वराए तसे य अण्णे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारंभंति अत्ताणे असरणे अणाहे अबंधवे कम्मनिगलबद्धे अकुसलपरिणाममंदबुद्धिजणदुव्विजाणए पुढवीमये पुढवीसंसिए जलमए जलगए अणलाणिलतणवणस्सतिगणनिस्सिए य तम्मयतज्जिते (जिते पा०) चेव तदाहारे तप्परिणतवण्णगंधरसफास (प्र० फरिस) बोंदिरूवे अचक्खुसे चक्खुसे य तसकाइए असंखे थावरकाए य सुहुमबायरपत्तेयसरीरनामसाधारणे अणंते हणंति अविजाणओ य परिजाणओ य जीवे इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, किं ते ? करिसणपोक्खरणीवाविवप्पिणिकूवसरतलागचितिवेति-यखातियआरामविहारथूभपागारदारगोउरअट्टालगचरियासेतुसंकमपासायविकप्पभवणघ (प्र० पु) रसरणलेणआवणचेतियदेवकुलचित्तसभापवाआयतणा-वसहभूमिघरमंडवाण य कए भायणभंडोवगरणस्स विविहस्स य अट्ठाए पुढविं हिंसंति मंदबुद्धिया जलं च मज्जणयपाणभोयणवत्थधोवणसोयमादिएहिं पयणपयावणजलावणविदंसणेहिं अगणिं सुप्पवियणतालयंटपेहुणमुहकरयलसागपत्तवत्थमादिएहिं अणिलं अगारपरिवा (डिया) रभक्खभोयणसयणासणफलकमुसलउखलततवितातोज्जवहणवाहणमंडवविविहभवणतोरणविडंगदएवमादिएहिं बहूहिं कारणसतेहिं हिंसन्ति ते तरुगणे, भणिता एवमादी सत्तपरिवज्जिया उवहणन्ति दढमूढा दारुणमती कोहा माणा माया लोभा हस्सरतीअरतीसोयवेदत्थीजीयकामत्थधम्महेउं सवसा अवसा अट्ठा अणट्ठाए य तसपाणे थावरे य हिंसंति, हिंसंति मंदबुद्धी सवसा हणंति अवसा हणंति सवसा अवसा दुहओ हणंति. अट्ठा हणंति अणट्ठा हणंति अट्ठा अणट्ठा दुहओ हणंति, हस्सा हणंति वेरा हणंति रतीय हणंति हस्सवेरारतीय हणंति कुद्धा हणंति लुद्धा हणंति मुद्धा हणंति कुद्धा लुद्धा मुद्धा हणंति अत्था हणंति धम्मा हणंति कामा हणंति अत्था धम्मा कामा हणंति ।३। कयरे ते ?, जे ते सोयरिया मच्छबंधा साउणिया वाहा कूरकम्मा वाउरिया दीवितबंधणप्पओगतप्पगलजालवीरल्लगायसी-दब्भवग्गुराकूडछेलिहत्था (दीविया पा०) हरिएसा साउणिया य वीदंसगपासहत्था वणचरगा लुद्धयमहुघातपोतघाया एणीयारा पएणियारा सरदहदीहिअतलागपल्ललपरिगालणमलणसोत्तबंधणसलिलासपसोसगा विसगरस्स य दायगा उत्तणवल्लरदवग्गिणिद्दयपलीवका कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुजाती, के ते ?, सकजवणसबरबब्बरगायमुरुंडोदभडगतित्तियपक्कणियकुलक्खगोडसीहलपारसकोंचंधदविलबिल्ललपुलिंदअरोसडोंबपोक्कण-गंधहारगबहलीयजल्लरोममासबउसमलया चुंचुया य चूलिया कोंकणगा मेतपण्हवमालवमहुर(प्र० मग्घर)आभासिया अणक्कचीणल्हासियखसखासिया नेहुरमरहट्ठमुट्ठिअआरबडोबिलगकुहणके कयहूणरोमगरू(प्र० भ)रुमरुगा चिलायविसयवासी य पावमतिणो जलयरथलयरसणप्फतोरग-खहचरसंडासतोंडजीवोवघायजीवी सण्णी य असण्णिणो य पज्जत्ता असुभलेस्सपरिणामा एते अण्णे य एवमादी करेंति पाणातिवायकरणं पावा पावाभिगमा पावरुई

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणावहकयरतीया पाणवहरूवाणुट्ठाणा पाणवहकहासु अभिरमंता तुट्ठा पावं करेत्तुं होंति य बहुप्पगारं, तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढंति महब्भयं अविस्सामवेयणं दीहकालबहुदुक्खसंकडं नरयतिरिक्खजोणिं, इओ आउक्खए चुया असुभकम्मबहुला उववज्जंति नरएसु हुलितं महालएसु वयरामयकुड्डरुद्दनिस्संधिदारविरहियनिम्मद्दवभूमितलखरामरिसविसमणिरयघरचारएसुं महोसिणसयावत्तदुग्गंधविस्सउव्वेयजणगेसु बीभच्छदरिसणिज्जेसु निच्चं हिमपडलसीयलेसु कालोभासेसु य भीमगंभीरलोमहरिसणेसु णिरभिरामेसु निप्पडियारवाहिरोगजरापीलिएसु अतीव निच्चंधकारतमिस्सेसु पतिभएसु ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसेसु मेयवसामंसपडलपोच्चडपूयरुहिरुक्किण्णविलीणचिक्कणरसिया वावण्णकुहियचिक्खल्लकद्दमेसु कुकूलानलपलित्तजालमुम्मुरअसिक्खुरकरवत्तधारासु निसितविच्छुयडंकनिवातोवम्मफरिसअतिदुस्सहेसु य अत्ताणासरणकडुयदुक्खपरितावणेसु अणुबद्धनिरंतरवेयणेसु जमपुरिससंकुलेसु, तत्थ य अन्तोमुहुत्तलद्धिभवपच्चएणं निव्वत्तेंति उ ते सरीरं हुंडं बीभच्छदरिसणिज्जं बीहणगं अट्ठिण्हारुणहरोमवज्जियं असुभगंधदुक्खविसहं, ततो य पज्जत्तिमुवगया इंदिएहिं पंचहिं वेदेंति असुभाए वेयणाए उज्जलबलविउल(प्र० तिउल)उक्कडखरफरुसपयंडघोरबीहणगदारुणाए, किं ते ?, कंदुमहाकुंभियपयणपउलणतवगतलणभट्ठभज्जणाणि य लोहकडाहुक्कड्ढणाणि य कोट्टबलिकरणकोट्टणाणि य सामलितिक्खग्गलोहकंटकअभिसरणपसारणाणि फालणविदालणाणि य अवकोडकबंधणाणि लट्ठिसयतालणाणि य गलगवलुल्लंबणाणि सूलग्गभयणाणि य आयंसपवंचणाणि खिंसणविमाणणाणि विघुट्ठपणिज्जणाणि वज्झसयमातिकाति य एवं ते पुव्वकम्मकयसंचयोवतत्ता निरयग्गिमहग्गिसंपलित्ता गाढदुक्खं महब्भयं कक्कसं जसायं सारीरं मानसं च तिव्वं दुव्विसहं वेदेंति वेयणं पावकम्मकारी बहूणि पलिओवमसागरोवमाणि कलुणं पालेन्ति ते अहाउयं जमकातियतासिता य सद्दं करेंति भीया, किं तं ?, अवि भायसामिमायबप्पताय जितवं मुय मे मरामि दुब्बलो वाहिपीलिओऽहं किं दाणि सि ? एवं दारुणो णिद्दय ! मा देहि मे पहारे उस्सासेतं मुहुत्तयं मे देहि पसायं करेहि मा रुस वीसमामि गेविज्जं मुयह मे मरामि, गाढं तण्हातिओ अहं देह पाणीयं हंता पिय इमं जलं विमलं सीयलंति घेत्तूण य नरयपाला तवियं तउयं से देंति कलसेण अंजलीसु दद्दूण य तं पवेवियंगोवंगा अंसुपगलंतपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हाइयम्ह कलुणाणि जंपमाणा विप्पेक्खन्ता दिसोदिसिं अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहूणा विपलायंति य मिगा इव वेगेण भयुव्विग्गा, घेत्तूण बला पलायमाणाणं निरणुकंपा मुहं विहाडेत्तुं लोहडंडेहिं कलकलं एहं वयणंसि छुभंति केई जमकाइया पासंता, तेण दड्ढा संतो रसंति य भीमाइं विस्सराइं रुवंति य कलुणगाइं पारेवतगाव, एवं पलवितविलावकलुणाकंदियबहुरुन्नरुदियसद्दो परिदेवितरुद्धंबद्धयनारकारवसंकुलो णीसट्ठो रसियभणियकुविउक्कूइयनिरयपालतज्जिय गेण्हक्कम पहर छिंद भिंद उप्पाडेहुक्खणाहि कत्ताहि विकत्ताहि य भुज्जो हण विहण विच्छुभोच्छुब्भ आकड्ढ विकड्ढ, किं ण जंपसि ? सराहि पावकम्माइं दुक्कयाइं एवं वयणमहप्पगब्भो पडिसुयासद्दसंकुलो तासओ सया निरयगोयराण महाणगरडज्झमाणसरिसो निग्घोसो सुव्वए अणिट्ठो तहियं नेरइयाणं जाइज्जंताणं जायणाहिं, किं ते ?, असिवणदब्भवणजंतपत्थरसूइतलक्खारवाविकलकलन्तवेयरणिकलंबवालुयाजलियगुहनिरुंभणउसिणोसिणकंटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गमणवाहणाणि इमेहिं विविहेहिं आयुहेहिं, किं ते ?, मोग्गरमुसुंढिकरकयसत्तिहलगयमुसलचक्कोंततोमरसूललउलभिंडिमालसद्द(द्ध)लपट्टिसचम्मेट्ठदुहणमुट्ठिय-असिखेडगखग्गचावनारायकणककप्पणिवासिपरसुटंकतिक्खनिम्मल अण्णेहि य एवमादिएहिं असुभेहिं वेउव्विएहिं पहरणसतेहिं अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्परवेयणं उदीरेंति अभिहणंता, तत्थ य मोग्गरपहारचुण्णियमुसुंढिसंभग्गमहितदेहा जंतोवपीलणफुरंतकप्पिया केइत्थ सचम्मका विगत्ता णिम्मूललूणकण्णोट्ठणासिका छिण्णहत्थपादा असिकरकयतिक्खकोंतपरसुप्पहारफालियवासीसंतच्छितंगमंगा कलकलमाणखारपरिसित्तगाढडज्झंतगत्तकुंतग्गभिण्णजज्जरियसव्वदेहा विलोलंति महीतले विसूणियंगमंगा (निग्गयंगजीवा पा०) तत्थ य विगसुणगसियालकाकमज्जारसरभदीवियवियग्घवगसद्दूलसीहदप्पियखुहाभिभूतेहिं णिच्चकालमणसिएहिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घोरा रसमाणभीमरूवेहिं अक्कमित्ता दढदाढागाढडक्ककडिढयसुतिक्खनहफालियउद्धदेहा विच्छिप्पंते समतओ विमुक्कसंधिबंधणा वियंगमंगा कंककुररगिद्धघोरकट्ठवायसगणेहि य पुणो खरथिरदढणक्खलोहतुंडेहिं ओवतित्ता पक्खाहयतिक्खणक्खविकिन्नजिब्भंछियनयणनिद्धओलुग्गविगतवयणा उक्कोसंता य उप्पयंता निपतंता भमंता पुव्वकम्मोदयोवगता पच्छाणुसएण डज्झमाणा णिदंता पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं तहिं २ तारिसाणि् ओसन्नचिक्कणाइं दुक्खातिं अणुभवित्ता ततो य आउक्खएणं उव्वट्टिया समाणा बहवे गच्छंति तिरियवसहिं दुक्खुत्तरं सुदारुणं जम्मणमरणजरावाहिपरियट्टणारहट्टं जलथलखहचरपरोप्परविहिंसणपवंचं इमं च जगपागडं वरागा दुक्खं पावेन्ति दीहकालं, किं ते ?, सीउण्हतण्हाखुहवेयणअप्पईकारअडविजम्मणणिच्चभउव्विग्गवासजग्गणवहबंधणताडणंकणनिवायणअट्ठिभंजणनासाभेयप्पहारदूमणच्छविच्छेयणअभिओगपावणकसंकुसारनिवायदमणाणि वाहणाणि य मायापितिविप्पयोगसोयपरिपीलणाणि य सत्थग्गिविसाभिघायगलगवलआवलणमारणाणि य गलजालुच्छिप्पणाणि पउलणविकप्पणाणि य जावज्जीविगबंधणाणि पंजरनिरोहणाणि य सयूहनिद्धाडणाणि य धमणाणि य दोहणाणि य डगलबंधणाणि य वाडगपरिवारणाणि य पंकजलनिमज्जणाणि य वारिप्पवेसणाणि य ओवायणिभंगविसमणिवडणदवग्गिजालदहणाई य. एवं ते दुक्खसयसंपलित्ता नरगाउ आगया इहं सावसेसकम्मा तिरिक्खपंचेंदिएसु पाविंति पावकारी कम्माणि पमायरागदोसबहुसंचियाइं अतीव अस्सायकक्कसाइं भमरमसगमच्छिमाइएसु य जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं नवहिं चउरिंदियाण तहिं तहिं चेव जम्मणमरणाणि अणुभवंता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणघाणचक्खुसहिया तहेव तेइंदिएसु कुंथुपिपीलिकाअवधिकादिकेसु य जातिकुलकोडिसयसहस्सेहिं अट्ठहिं अणूणएहिं तेइंदियाण तहिं २ चेव जम्मणमरणाणि अणुहवंता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणघाणसंपउत्ता गंडूलयजलूयकिमियचंदणगमादिएसु य जातीकुलकोडिसयसहस्सेहिं सत्तहिं अणूणएहिं बेइंदियाण तहिं २ चेव जम्मणमरणाणि अणुहवंता कालं संखिज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणसंपउत्ता पत्ता एगिंदियत्तणंपि य पुढवीजलजलणमारुयवणप्फती सुहुमबायरं च पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेयसरीरणाम साहारणं च पत्तेयसरीरजीविएसु य तत्थवि कालमसंखेज्जगं भमंति अणंतकालं च अणंतकाए फासिंदियभावसंपउत्ता दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पाविंति पुणो तहिं चेव परभवतरुगणगणे (गहणे पा०) कोद्दालकुलियदालणसलिलमलणखुंभणरुंभणअणलाणिलविविहसत्थघट्टणपरोप्पराभिहणणमारणविराहणाणि य अकामकाइं परप्पओगोदीरणाहि य कज्जपओयणेहि य पेस्सपसुनिमित्तओसहाहारमाइएहिं उक्खणणऊक्कत्थणपयणकोट्टणपीसणपिट्टणभज्जणगालणआमोडणसडणफुडणमज्जणछेयणतच्छणविलुंचणपत्तज्झोडणअग्गिदहणाइयातिं, एवं ते भवपरंपरादुक्खसमणुबद्धा अडंति संसारबीहणकरे जीवा पाणाइवायनिरया अणंतकालं, जेवियइह माणुसत्तणं आगया कहंचि नरगा उव्वट्टिया अधन्ना तेवियदीसंति पायसो विकयविगलरूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुंटा पंगुला विउला य मूका य (अविय जलमूया पा०) मंमणा य अंधयगा एगचक्खू विणिहयसचे (पिस पा०) ल्लया वाहिरोगपीलियअप्पाउयसत्थवज्झवाला कुलक्खणुक्किन्नदेहा दुब्बलकुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिया कुरूवा किविणा य हीणा हीणसत्ता निच्चं सोक्खपरिवज्जिया असुहदुक्खभागा णरगाओ उव्वट्टंति इहं सावसेसकम्मा एवं णरगं तिरिक्खजोणिं कुमाणुसत्तं च हिंडमाणा पावंति अणंताइं दुक्खाइं पावकारी, एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइओ परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भयो बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चति, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति एवमाहंसु, नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसीय पाणवहस्स फलविवागं, एसो सो पाणवहो चंडो रुद्दो खुद्दो अणारिओ निग्घिणो निस्संसो महब्भओ बीहणओ तासणओ अणज्जो उव्वेयणओ य णिरवयक्खो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरयवासगमणनिधणो मोहमहब्भयपवड्ढओ मरणवेमणसो ।**☆☆☆ पढमं अहम्मदारं समत्तंतिबेमि ☆☆☆ ।४॥ द्वारं १ ॥ जंबू । बितियं च दारं☆☆☆** अलियवयणं लहुसगलहुचवलभणियं भयंकरं दुहकरं अयसकरं वेरकरगं अरतिरतिरागदोसमणसंकिलेसवियरणं अलियनियडिसातिजोयबहुलं नीयजणनिसेवियं निस्संसं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पच्चयकारकं परमसहुगरहणिज्जं परपीलाकारकं परमकिण्हलेस्ससहियं दुग्गइविणिवायवड्ढणं भवपुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगतं दुरन्तं कित्तियं बितितं अधम्मदारं।५। तस्स य णामाणि गोण्णाणि होंति तीसं, तं०- अलियं सढं अणज्जं मायामोसा असंतकं कूडकवडमत्थुगं च निरत्थयमवत्थयं च विद्देसगरहणिज्जं अणुज्जुकं कक्कणा य १० वंचणाय मिच्छापच्छाकडं च साती उ उच्छन्नं उक्कूलं च अट्टं अब्भक्खाणं च किब्बिसं वलयं गहणं च २० मम्मणं च नूमं निययी अप्पच्चओ असमओ असच्चसंधत्तणं विवक्खो अवहीयं (आणाइयं पा०) उवहिअसुद्धं अवलोवोत्ति ३०. अविय तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं सावज्जस्स अलियस्स वइजोगस्स अणेगाइं।६। तं च पुण वदंति केई अलियं पावा असंजया अविरया कवडकुडिलकडुयचडुलभावा कुद्धा लुद्धा भया य हस्सट्ठिया य सक्खी चोरचारभडा खंडरक्खा जियजूईकरा य गहियगहणा कक्ककुरुगकारगा कुलिंगी उवहिया वाणियगा य कूडतुलकूडमाणी कुडकाहावणोवजीवी पडगारकलायकारुइज्जा वंचणपरा चारियचाटुयारनगरगोत्तियपरिचारगा दुट्ठवायिसूयकअणबलभणिया य पुव्वकालियवयणदच्छा साहसिका लहुस्सगा असच्चा गारविया असच्चट्ठावणाहिचित्ता उच्चच्छंदा अणिग्गहा अणियता छंदेण मुक्कवाता भवंतिअलियाहिं जे अविरया, अवरे नत्थिकवादिणो वामलोकवादी भणंति नत्थि जीवो न जाइ इह परे वा (१३०) लोए न य किंचिवि फुसति पुन्नपावं नत्थि फलं सुकयदुक्कयाणं पंचमहाभूतियं सरीरं भासंति हे! वातजोगजुत्तं, पंच य खंधे भणंति केई, मणं च मणजीविका वदंति, वाउजीवोत्ति एवमाहंसु. सरीरं सादियं सनिधणं इह भवे एगे भवे तस्स विप्पणासंमि सव्वनासोत्ति, एवं जंपंति मुसावादी, तम्हा दाणवयपोसहाणं तवसंजमबंभचेरकल्लाणमाइयाणं नत्थि फलं नवि य पाणवहे अलियवयणं न चेव चोरिक्ककरणपरदारसेवणं वा सपरिग्गहपावकम्मकरणंपि नत्थि किंचि न नेरइयतिरियमणुयाण जोणी न देवलोको वा अत्थि न य अत्थि सिद्धिगमणं अम्मापियरो नत्थि नवि अत्थि पुरिसकारो पच्चक्खाणमवि नत्थि नवि अत्थि कालमच्चू य अरिहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा नत्थि नेवत्थि केई रिसओ धम्माधम्मफलं च नवि अत्थि किंचि बहुयं च थोवकं वा. तम्हा एवं विजाणिऊण जहा सुबहु इंदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्टह णत्थि काई किरिया वा अकिरिया वा एवं भणंति नत्थिकवादिणो वामलोगवादी, इमंपि बितीयं कुदंसणं असब्भाववाइणो पण्णवेंति मूढा-संभूतो अंडकाओ लोको सयंभूणा सयं च निम्मिओ, एवं एयं अलियं. पयावइणा इस्सरेण य कयंति केति, एवं विण्हुमयं कसिणमेव य जगंति केई, एवमेके वदंति मोसं एको आया अकारको वेदको य सुकयस्स दुक्कयस्स य करणाणि कारणाणि सव्वहा सव्वहिं च निच्चो य निक्किओ निग्गुणो य अणुव (अन्नो अ पा०) लेवओत्तिविय एवमाहंसु असब्भावं, जंपि इहं किंचि जीवलोके दीसइ सुकयं वा दुक्कयं वा एयं वा जदिच्छाए वा सहावेण वावि दइवतप्पभावओ वावि भवति, नत्थेत्थ किंचि कयकतत्तं लक्खणविहाणनियतीए कारियं एवं केई जंपंति इड्ढिरससातगारवपरा बहवे करणालसा परूवेंति धम्मवीमंसएण मोसं, अवरे अहम्मओ रायदुट्ठं अब्भक्खाणं भणेंतिअलियं चोरोत्ति अचोरयं करेंतं डामरिउत्तिवि य एमेव उदासीणं दुस्सीलोत्ति य परदारं गच्छतित्ति मइलिंति सीलकलियं अयंपि गुरुतप्पओ अण्णे एमेव भणंति उवाहणंता मित्तकलत्ताइं सेवंति अयंपि लुत्तधम्मो इमोवि विसंधायओ पावकम्मकारी अगम्मगामी अयं दुरप्पा बहुएसु य पापगेसु जुत्तोत्ति एवं जंपंति मच्छरी, भद्दके वा गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा, एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेढेन्ति अक्खातियबीएण अप्पाणं कम्मबंधणेण मुहरी असमिकिखयप्पलावा निक्खेवे अवहरंति परस्स अत्थंमि गढियगिद्धा अभिजुंजंति य परं असंतएहिं लुद्धा य करेंति कूडसक्खित्तणं असच्चा अत्थालियं च कन्नालियं च भोमालियं च तह गवालियं च गरुयं भणंति अहरगतिगमणं, कारणं अन्नंपि य जातिरूवकुलसीलपच्चयं मायाणिगुणं चवलपिसुणं परमट्ठभेदकमसंकं विद्देसमणत्थकारकं पावकम्ममूलं दुद्दिट्ठं दुस्सुयं अमुणियं निल्लज्जं लोकगरहणिज्जं वहबंधपरिकिलेसबहुलं जरामरणदुक्खसोयनिम्मं असुद्धपरिणामसंकिलिट्ठं भणंति अलिया हिंसंति संनिविट्ठा असंतगुणुदीरका य संतगुणनासका य हिंसाभूतोवघातितं अलियसंपउत्ता वयणं सावज्जमकुसलं साहुगरहणिज्जं अधम्मजणणं भणंति अणभिगयपुन्नपावा, पुणोवि अधिकरणकिरियापवत्तका बहुविहं अणत्थं अवमद्दं अप्पणो परस्स य करेंति, एमेव जंपमाणा महिसस्करे य साहिंति घायगाणं ससयपसयरोहिए य साहिंति वागुराणं तित्तिरवट्टकलावके य कविंजलकवोयके य साहिंति साउणीणं झसमगरकच्छभे य साहिंति

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मच्छियाणं संखके खुल्लए य साहिंति मगराणं (मग्गिणं पा०) अयगरगोणसमंडलिदव्वीकरे मउली य साहिंति वालवीणं (वायलियाणं पा०) गोहासेहगसल्लगसरडके य साहिंति लुद्धगाणं गयकुलवानरकुले य साहिंति पासियाणं सुकबरहिणमयणसालकोइलहंसकुले सारसे य साहिंति पोसगाणं वधबंधजावणं च साहिंति गोम्मियाणं धरधन्नगवेलए य साहिंति तक्कराणं गामागरनगरपट्टणे य साहिंति चारियाणं पारघाइयपंथघातियाओ साहंति गंठिभेयाणं कयं च चोरियं नगरगोत्तियाणं लंछणनिल्लंछणधमणदुहणपोसणवणणदवणवाहणादियाइं साहिंति बहूणि गोमियाणं धातुमणिसिलप्पवालरयणागरे य साहिंति आगरीणं पुप्फविहिं फलविहिं च साहिंति मालियाणं अग्घमहुकोसए य साहिंति वणचराणं जंताइं विसाइं मूलकम्मं आहेव (हिव्व पा०) णआविंधणआभिओगमंतोसहिप्पओगे चोरियपरदारगमणबहुपावकम्मकराणं उक्खंधे गामघातवाओ वणदहणतलागभेयणाणि बुद्धिविसविणासणाणि वसीकरणमादियाइं भयमरणकिलेसदोसजणणाणि भावबहुसंकिलिट्ठमलिणाणि भूतघातोवघातियाइं सच्चाइंपि ताइं हिंसकाइं वयणाइं उदाहरंति पुट्ठा वा अपुट्ठा वा परतत्तियवावडा य असमिक्खियभासिणो उवदिसंति सहसा उट्ठा गोणा गवया दंमंतु परिणयवया अस्सा हत्थी गवेलगकुक्कुडा य किज्जंतु किणावेध य विक्केह पयह य सयणस्स देह पियय (खादत पिबत दत्त च पा०) दासिदासभयकभाइल्लका य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा य किंकरा य एए सयणपरिजणो य कीस अच्छंति भारिया भे करित्तु (करिंतु पा०) कम्मं गहणाइं वणाइं खेत्तखिलभूमिवल्लराइं (छिद्यन्तामखिलभूमिवल्लराणि पा०) उत्तणघणसंकडाइं डज्झंतु सूडिज्जंतु य रुक्खा भिज्जंतु जंतभंडाइयस्स उवहिस्स कारणाए बहुविहस्स य अट्ठाए उच्छू दुज्झंतु पीलिज्जंतु य तिला पयावेह य इट्टकाउ मम घरट्ठयाए खेत्ताइं कसह कसावेह य लहुं गामआगरनगरखेडकब्बडे निवेसेह अडवीदेसेसु विपुलसीमे पुप्फाणि य फलाणि य कंदमूलाइं कालपत्ताइं गेण्हेह करेह संचयं परिजणट्ठयाए साली वीही जवा य लुच्चंतु मलिज्जंतु उप्फणिज्जंतु य लहुं च पविसंतु य कोट्ठागारं अप्पमहउक्कोसगा य हंमंतु पोयसत्था सेणा णिज्जाउ जाउ डमरं घोरा वट्टंतु य संगामा पवहन्तु य सगडवाहणाइं उवणयणं चोलगं विवाहो जन्नो अमुगम्मि उ होउ दिवसेसु करणेसु मुहुत्तेसु तिहिसु य अज्ज होउ ण्हवणं मुदितं बहुखज्जपिज्जकलियं कोतुकं विण्हावणकं संतिकम्माणि कुणह ससिरविगहोवरागविसमेसु सज्जणपरियणस्स य नियकस्स य जीवियस्स परिरक्खणट्ठयाए पडिसीसकाइं च देह देह य सीसोवहारे विविहोसहिमज्जमंसभक्खन्नपाणमल्लाणुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधिधूवावकरपुप्फफल (प्र० बलि) समिद्धे पायच्छित्ते करेह पाणाइवायकरणेणं बहुविहेणं विवरीउप्पायदुस्सुमिणपावसउणअसोमग्गहचरियअमंगलनिमित्तपडिघायहेउं वित्तिच्छेयं करेह मा देह किंचि दाणं सुट्ठु हओ सुट्ठु छिन्नो भिन्नत्ति उवदिसंता एवंविहं करेंति अलियं मणेण वायाए कम्मुणा य अकुसला अणज्जा अलियप्पाणो अलियधम्मणिरया अलियासु कहासु अभिरमंता तुट्ठा अलियं करेत्तु होंति य बहुप्पयारं।७। तस्स य अलियस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेंति महब्भयं अविस्सामवेयणं दीहकालं बहुदुक्खसंकडं नरयतिरियजोणिं तेण य अलिएण समणुबद्धा आइद्धा पुणब्भवंधकारे भमंति भीमे दुग्गतिवसहिमुवगया. ते य दीसंतिह दुग्गया दुरंता परवसा अत्थभोगपरिवज्जिया असुहिता फुडियच्छविबीभच्छविवन्ना खरफरूसविरत्तज्झामज्झुसिरा निच्छाया लल्लविफलवाया असक्कतमसक्कया अगंधा अचेयणा दुभगा अकंता काकस्सरा हीणभिन्नघोसा विहिंसा जडबहिरन्धमूया य मम्मणा अकं (क पा०) तविकयकरणा णीया णीयजणनिसेविणो लोगगरहणिज्जा भिच्चा असरिसजणस्स पेस्सा दुम्मेहा लोकवेदअज्झप्पसमयसुतिवज्जिया नरा धम्मबुद्धिवियला अलिएण य तेणं पडज्झमाणा असंतएण य अवमाणणपट्ठिमंसाहिक्खेव-पिसुणभेयणगुरूबंधवसयणमित्तवक्खारणादियाइं अब्भक्खाणाइं बहुविहाइं पावेंति अणुपमाणि (अमणोरमाइं पा०) हिययमणदूमकाइं जावज्जीवं दुरूद्धराइं अणिट्ठसरफरूसवयणतज्जणनिब्भच्छणदीणवदणविमणा कुभोयणा कुवाससा कुवसहीसु किलिस्संता नेव सुहं नेव निव्वुइं उवलभंति अच्चंतविपुलदुक्खसयसंपलि (प्र० उ) त्ता. एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारूणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति एवमाहंसु, नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसीय अलियवयणस्स फलविवागं एयं तं वितीयंपि अलियवयणं लहुसगलहुचवलभणियं भयंकरं दुहकरं अयसकरं वेरकरगं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अरतिरतिरागदोसमणसंकिलेसविरयणं अलियणियडिसादिजोगबहुलं नीयजणनिसेवियं निस्संस्सं अप्पच्चयकारकं परमसाहुगरहणिज्जं परपीलाकारगं परमकण्हलेससहियं दुग्गतिविनिवायवड्ढणं पुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगयं दुरंतं. ☆☆☆ **बितियं अधम्मदारं समत्तं ।८॥ दारं २॥ जंबू ! तइयं च अदत्तादाणं**☆☆☆ हरदहमरणभयकलुसतासणपरसंतिगऽभेज्जलोभमूलं कालविसमसंसियं अहोऽच्छिन्नतण्हपत्थाणपत्थाइमइयं अकित्तिकरणं अणज्जं छिद्दमंतरविधुरवसणमग्गणउस्सवमत्तप्पमत्तपसुत्तवंचणक्खिवणघायणपराणिहुय-परिणामतक्करजणबहुमयं अकलुणं रायपुरिसरक्खियं सया साहुगरहणिज्जं पियजणमित्तजणभेदविप्पीतिकारकं रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूर (प्र०थूर) समरसंगामडमरकलिकलहवे (प्र०व) हकरणं दुग्गइविणिवायवड्ढणं भवपुणब्भवकरं चिरपरिचितमणुगयं दुरंतं, तइयं अधम्मदारं ।९। **तस्स य णामाणि गोन्नाणि होंति तीसं.** तं०-चोरिक्कं परहडं अदत्तं कूरिकडं (कुसद्दयकयं पा०) परलाभो असंजमो परधणंमि गेही लोलिक्कं तक्करत्तणंति अवहारो १० हत्थलत्तणं (लहुत्तं पा०) पावकम्मकरणं तेणिक्कं हरणविप्पणासो आदियणा लुंपणा धणाणं अप्पच्चओ अ (प्र० ओ) वीलो अक्खेवो खेवो २० विक्खेवो कूडया कुलमसी य कंखा लालप्पणपत्थणा य (आससणा य पा०) वसणं इच्छामुच्छा य तण्हागेहि नियडिकम्मं अपरच्छंतिविय ३०, तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं अदिन्नादाणस्स पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स अणेगाइं ।१०। तं पुण करेंति चोरियं तक्करा परदव्वहरा छेया कयकरणलद्धलक्खा साहसिया लहुस्सगा अतिमहिच्छलोभगत्था दद्दरओवीलका य गेहिया अहिमरा अणभंजकभग्गसंधिया रायदुट्ठकारी य विसयनिच्छूढलोगवज्झा उद्दोहकगामघाययपुरघायगपंथघायगआलीवगतित्थभेया लहुहत्थसंपउत्ता जूइकरा खंडरक्खत्थी चोरपुरिसचोरसंधिच्छेया य गंथिभेदगपरधणहरणलोमावहारअक्खेवी (घ पा०) हडकारका निम्मद्दगगूढचोरकगोचोरगअस्सचोरगदासिचोरा य एक (प्र० थक्क) चोरा ओकड्ढकसंपदायकउच्छिंपकसत्थघायकबिलचोरी (कोली) कारका य निग्गाहविप्पलुंपगा बहुविहतेणिक्क (प्र० तहव) हरणबुद्धी. एते अन्ने य एवमादी परस्स दव्वा हि जे अविरया०, विपुलबलपरिग्गहा य बहवे रायाणो परधणंमि गिद्धा सए व दव्वे असंतुट्ठा परविसएअहिहणंति ते लुद्धा परधणस्स कज्जे चउरंगविभत्त (प्र० समंत) बलसमग्गा निच्छियवरजोह जुद्धसद्धियअहमहमितिदप्पिएहिं (सेन्नेहिं पा०) संपरिवुडा पउम (प्र० त्त) सगडसूइचक्कसागरगरूलवूहातिएहिं अणिएहिं उत्थरंता अभिभूय हरंति परधणाइं अवरे रणसीसलद्धलक्खा संगामंमि अतिवयंति सन्नद्धबद्धपरियरउप्पीलियचिंधपट्टगहियाउहपहरणा माढिवर (गूढ पा०)-वम्मगुंडिया आविद्धजालिका कवयकंकडइया उरसिरमुहबद्धकंठतोणमाइतवरफलहरचितपहकरसरहसखर चावकरकरंछियसुनिसितसरवरिसचडकरकमुयंत (मंते पा०) घणचंडवेगधारानिवायमग्गे अणेगधणुमंडलग्गसंधिता उच्छलियसत्तिकणगवामकरगहियखेडगनिम्मलनिक्किट्ठखग्गपहरंतकोंततोम-रचक्कगयापरसुमुसललंगलसूललउलभिंडमालासब्बलपट्टिसचम्मेट्ठदु घणमोट्ठियमोग्गरवरफलिहजंतपत्थरदुहणतोणकुवेणीपीढकलियईलीपहर-णमिलिमिलिमिलंतखिप्पंतविज्जुज्जलविरचितसमप्पहणभतले फुडपहरणे महारणसंखभेरि (प्र० दुन्दुभि) वरतूरपउरपडुपहडाहयणिणाय-गंभीरणंदितपक्खुभियविपुलघोसे हयगयरहजोहतुरितपसरितउद्धततमंधकारबहुले कातरनरणयणहिययवाउलकरे विलुलियउक्कडवरमउडतिरीडकुंडलोडुदामाडोवियम्मि पागडपडागउसियज्झयवेजयंतिचामरचलंतछत्तंधकारगम्भीरे हयहेसियहत्थिगुलुगुलाइयरहघण-घणाइयपाइक्कहरहराइयअप्फोडियसीहनाया छेलियविघुट्ठुक्कुट्ठल्लंठगयसद्दभीमगज्जिए सयराहहसंतरूसंतकलकलरवे आसूणियवयणरूद्दे भीमदसणाधरोट्ठगाढदट्ठे सप्पहरणुज्जयकरे अमरिसवसतिव्वरत्तनिद्दारितच्छे वेरदिट्ठिकुद्धचिट्ठियतिवलीकुडिलभिउडिकयनिलाडे वहपरिणयनरसहस्सविक्कमवियंभियबले वग्गंततुरगरहपहावियसमरभडावडियछेयलाघवपहारसाधितासमूसवियबाहुजुयले मुक्कट्टहासपुक्कंतबोलबहुले फलफलगावरणगहियगयवरपत्थितदरियभडखलपरोप्परपलग्गजुद्धगव्वितविउसितवरासिरोसतुरियअभिमुहपहरितछिन्नकरिकरविभंगितकरे अवइद्धनिसुद्धभिन्नफालियपगलियरूहिरकतभूमिकद्दमचिलिचिल्लपहे कुच्छिविदालियगलितरुलितनिभेल्लंततफुरूफुरंतविगलमम्माहयविकयगाढ-

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिन्नपहारमुच्छिंतरूलंतवेंभलविलावकलुणे हयजोहभमंततुरगउद्दाममत्तकुंजरपरिसंकितजणनिलुक्के छिन्नधयभग्गरहवरनट्ठ सिरकरिकलेवराकिन्नपतितपहरणविकिन्नाभरणभूमिभागे नच्चंतकबंधपउरभयंकर वायसपरिलेंतगिद्धमंडलभमंतच्छायंधकारगंभीरे वसुवसुहविकंपितव्व पच्चक्खपिउवणं परमरूद्दवीहणगं दुप्पवेसतरगं अभिवयंति संगामसंकडं, परधणं महंता अवरे पाइक्कचोरसंघा सेणावतिचोरवंदपागडिढका य अडवीदेसदुग्गवासी कालहरितरत्तपीतसुक्किल्लअणेगसयचिंघपट्टबद्धा परविसए अभिहणंति लुद्धा धणस्स कज्जे रयणागरसागरं च उम्मीसहस्समालाउलाकुलवितोयपोतकलकलेंतकलियं पायालसहस्सवायवसवेगसलिलउद्धम्ममाणदगरयरयंधकारं वरफेणपउरधवलपुलंपुलसमुट्ठियट्टहासं मारूयविच्छुभमाणपाणियजलमालुप्पीलहुलियं अविय समंतओ खुभियलुलियंखोखुब्भमाणपक्खलियचलियविपुलजलचक्कवालमहानईवेगतुरिय-आपूरमाणगंभीरविपुलआवत्तचवलभममाणगुप्पमाणु च्छलेंतपच्चोणियत्तपाणियपधावियखरफरूसपयंडवाउलियससलिलं फुट्टंतवीतिकल्लोलसंकुलजलं महामगरमच्छकच्छभोहारगाहतिमिसुंसुमारसावयसमाहयसमुद्धायमाणकपूरघोरपउरं कायरजणहिययकंपणं घोरमारसंतं महब्भयं भयंकरं पतिभयं उत्तासणगं अणोरपारं आगासं चेव निरवलंबं उप्पाइयपवणधणितनोल्लियउवरूवरितरंगदरियअतिवेगवेगचक्खुपहमुच्छरंतं कत्थई गंभीरविपुलगज्जियगुंजियनिग्घायगरूयनिवतितसुदीहनीहारिदूर सुव्वंतगंभीरधुगुधुगंतसद्दं पडिपहरूंभंतजक्खरक्खसकुहंडपिसाय (रूसियतज्जाय पा०) उवसग्गसहस्ससंकुलं बहूप्पाइय (उवद्दव पा०) भूयं विरचितबलिहोमधूवउवचारदिन्नरूधिरच्चणाकरणपयतजोगपययचरियं परियन्तजुगंतकालकप्पोवमं दुरंतमहानईनईवइमहाभीमदरिसणिज्जं दुरणुच्चरं विसमप्पवेसं दुक्खुत्तारं दुरासयं लवणसलिलपुण्णं असियसियसमूसियगेहिं हत्थतरकेहिं वाहणेहिं अइवइत्ता समुद्दमज्झे हणंति गंतूण जणस्स पोते परदव्वहरण (हराण) रभसनिरणुकंपा (नरा पा०) निरावयक्खा गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमणिगमजणवते य धणसमिद्धे हणंति थिरहिययछिन्नलज्जा बंदिग्गहग्गोग्गहे य गेण्हंति दारूणमती णिक्किवा धणियं हणंति छिंदंति गेहसंधिं निक्खित्ताणि य हरंति धणधन्नदव्वजायाणि जणवयकुलाणं णिग्घिणमती परस्स दव्वाइं जे अविरया०, तहेव केइ अदिन्नादाणं गवेसमाणा कालाकालेसु संचरंता चियकापज्जलियसरसदरदड्ढकडिढयकलेवरे रूहिरलित्तवयणअखत (अदर पा०) खातियपीतडाइणिभमंतमयंकरे जंबुयक्खिक्खियंते घूयकयघोरसद्दे वेयालुट्ठियनिसुद्धकहकहितपहसितबीहणकनिरभिरामे अतिदुब्भिगंधबीभच्छदरिसणिज्जे सुसाणवणसुन्नघरलेणअंतरावणगिरिकंदरविसमसावयसमाकुलासु वसहीसु किलिस्संता सीतातवसोसियसरीरा दड्ढच्छवी निरयतिरियभवसंकडदुक्खसंभारवेयणिज्जाणि पावकम्माणि संचिणंता दुल्लहभक्खन्नपाणभोयणा पिवासिया झुंझिया किलंता मंसकुणिमकंदमूलजंकिंचियाहारा उव्विग्गा उप्पुया असरणा अडवीवासं उवेंति वालसतसंकणिज्जं अयसकरा तक्करा भयंकरा कास हरामोत्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेंति गुज्झं बहुयस्स जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरा मत्तपमत्तपसुत्तवीसत्थछिद्दघाता वसणब्भुदएसु हरणबुद्धी विगव्व रूहिरमहिया परेंति नरवतिमज्जायमतिक्कंता सज्जणजणदुगुंछिया सकम्मेहिं पावकम्मकारी असुभपरिणया य दुक्खभागी निच्चाइलदुहमनिव्वुइमणा इहलोके चेव किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयसमावण्णा।११। तहेव केइ परस्स दव्वं गवेसमाणा गहिता य हया य बद्धरूद्दा य तुरियं अतिधाडिया पुरवरं समप्पिया चोरग्गहचारभडचाडुकराण तेहि य कप्पडप्पहारनिद्दयआरक्खियखरफरूसवयणतज्जणगलच्छल्लुच्छल्लणाहिं विमणा चारगवसहिं पवेसिया निरयवसहिसरिसं तत्थवि गोमियप्पहारदूमणनिब्भच्छणकडुयवदणभेसणगा (गभया पा०) भिभूया अक्खित्तनियंसणा मलिणदंडिखंडनिवसणा उक्कोडालंचपासमग्गणपरायणेहिं दुक्खसमुदरीणेहिं गोयम्मियभडेहिं विविहेहिं बंधणेहिं, किं ते ?, हडिनिगडवालरज्जुयकुदंडगवरत्तलोहसंकलहत्थंदुयवज्झपट्टदामकणिक्कोडणेहिं अन्नेहि य एवमादिएहिं गोम्मिकभंडोवकरणेहिं दुक्खसमुदीरणेहिं संकोडमोडणाहिं वज्झंति मंदपुन्ना संपुडकवाडलोहपंजरभूमिघरनिरोहकूव-चारगकीलगजूयचक्कविततबंधणखंभालणउद्धचलणबंधणविहम्मणाहि य विहेडयन्ता अवकोडकगाढउरसिरबद्धउद्धपूरितफुरंतउरकडगमोडणामेडणाहिं बद्धा य

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीससंता सीसावेढउरूयावलचप्पडगसंधिबंधणतत्तसलागसूइयाकोडणाणि तच्छणविमाणणाणि य खारकडुयतित्तनावणजायणाकारणसयाणि बहुयाणि पावियंता उरक्खडोदिन्नगाढपेल्लणअट्ठिकसंभग्गसपंसुलीगा गलकालकलोहदंडउरउदरवत्थिपरिपीलिता मत्थंतहिययसंचुण्णियंगमंगा आणत्तीकिंकरेहिं केति अविराहियवेरिएहिं जमपुरिससन्निहेहिं पहया ते तत्थ मंदपुण्णा चवेडवेलावज्झपट्टपाराइंछिवकसलतवरत्तनेत्तप्पहारसयतालियंगमंगा किवणणा लंबंतचम्मवणवेयणविमुहियमणा घणकोट्टिमनियलजुयलसंकोडियमोडिया य कीरंति निरूच्चारा एया अन्ना य एवमादीओ वेयणाओ पावा पावेंति अदन्तिंदिया वसट्टा बहुमोहमोहिया परधणंमि लुद्धा फासिंदियविसयतिव्वगिद्धा इत्थीगयरूवसद्दरसगंइट्ठरतिमहितभोगतण्हाइया य धणतोसगा गहिया य जे नरगणा पुणरवि ते कम्मदुव्वियद्धा उवणीया रायकिंकराण तेसिं वहसत्थगपाढयाणं विलउलीकारकाणं लंचसयगेण्हगाणं कूडकवडमायानियडिआयरणपणिहिवंचणविसारयाणं बहुविहअलियसतजंपकाणं परलोकपरम्मुहाणं निरयगतिमामियाणं तेहि य आणत्तजीयदंडा तुरियउग्घाडिया पुरवरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु वेत्तदंडलउडकट्ठलेट्ठु पत्थरपणालिपणोल्लिमुट्ठिलयापादपण्हिजाणुकोप्परपहारसंभग्गमहियगत्ता अट्टारसकंमकारणा जाइयंगमंगा कलुणा सुक्कोट्ठकंठगलकतालुजीहा जायंता पाणीयं विगयजीवियासा तण्हादिता वरागा तंपिय ण लभंति वज्झपुरिसेहिंधाडियंता तत्थ य खरफरूसपडहघट्टितकूडग्गहगाढरूट्ठनिसट्ठपरामुट्ठा वज्झकरकुडिजुयनियत्था सुरत्तकणवीरगहियविमुकुलकंठे गुणवज्झदूतआविद्धमल्लदामा मरणभयुप्पण्णसेदआयतणे हुत्तुपियकिलिन्नगत्ता चुण्णगंडियसरीररयरेणुभरियकेसा कुसुंभगोक्किन्नमुद्धया छिन्नजीवियासा घुन्नंता वज्झपाणपीया (याण भीता पा०) तिलंतिलं चेब छिज्जमाणा सरीरविक्कन्तलोहिओलित्ता कागणिमंसाणि खावियंता पावा खरफरूसएहिं तालिज्जमाणदेहा वातिकनरनारीसंपरिवुडा पेच्छिज्जंता य नागरजणेण वज्झनेवत्थिया पणेज्जंति नयरमज्झेण किवणकलुणा अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहीणा विपेक्खिंता दिसोदिसिं मरणभयुव्विग्गा आघायणपडिदुवारसंपाविया अधन्ना सूलग्गविलग्गभिन्नदेहा, ते य तत्थ कीरंति परिकप्पियंगमंगा उल्लंबिज्जंति रूक्खसालासु केइ कलुणाइं विलवमाणा अवरे चउरंगधणियबद्धा पव्वयकडगा पमुच्चंते दूरपातबहुविसमपत्थरसहा अन्ने य गयचलणमलणयनिम्मद्दिया कीरंति पावकारी अट्टारसखंडिया य कीरंति मुंडपरसूहिं केई उक्कत्तकन्नोट्ठनासा उप्पाडियनयरदसणवसणा जिब्भिंदियऽच्छिया छिन्नकन्नसिरा पणिज्जंते छिज्जंते य असिणा निव्विसया छिन्नहत्थपाया पमुच्चंते जावज्जीवबंधणा य कीरंति केई परदव्वहरणलुद्धा कारग्गलनियलजुयलरूद्धा चारगावहतसारा सयणविप्पमुक्का मित्तजणनिरिक्ख (रक्कि) या निरासा बहुजणधिक्कारसद्दलज्जायिता अलज्जा अणुबद्धखुहा पारद्धसीउण्हतण्हवेयणदुग्घट्टिया विवन्नमुहविच्छविया विहलमतिलदुब्बला किलंता कासंता वाहिया य आमाभिभूयगत्ता परूढनहकेसमंसुरोमा छगमुत्तंमि नियगंमि खुत्ता तत्थेव मया अकामका बंधिऊण पादेसु कड्ढिया खाइयाए छूढा तत्थ य बगसुणगसियालकोलमज्जारचंडसंदंसगतुंडपक्खिगणविविहमुहसयलविलुत्तगत्ता कयविहंगा केई किमिणा य कुहियदेहा अणिट्ठवयणेहिं सप्पमाणा सुट्ठु कयं जं मउत्ति पावो तुट्ठेणं जणेण हम्ममाणा लज्जावणका य होंति सयणस्सविय दीहकालं मया संता, पुणो परलोगसमावन्ना नरए गच्छंति निरभिरामे अंगारपलित्तककप्पअच्चत्थसीतवेदणअस्साउदिन्नसयतदुक्खसयसमभिद्दुते ततोवि उव्वट्टिया समाणा पुणोवि पवज्जंति तिरियजोणिं तहिंपि निरयोवमं अणुहवंति वेयणं, ते अणंतकालेण जति नाम कहिंचि मणुयभावं लभंति णेगेहिं णिरयगतिगमणतिरियभवसयसहस्सपरियट्टेहिं तत्थविय भवंतऽणारिया नीचकुलसमुप्पण्णा आरियजणेवि लोगबज्झा तिरिक्खभूता य अकुसला कामभोगतिसिया जहिं निबंधंति निरयवत्तणिभवप्पवंचकरणपणोल्लिं पुणोवि संसार (रा) वत्तणेममूले धम्मसुतिविवज्जिया अणज्जा कूरा मिच्छत्तसुतिपवन्ना य होंति एगंतदंडरूइणो वेढेंता कोसिकारकीडोव्व अप्पगं अट्ठकम्मतंतुघणबंधणेणं, एवं नरगतिरियनरअमरगमणपेरंतचक्कवालं जम्मजरामरणकरणगम्भीरदुक्खपखुभियपउरसलिलं संजोगविओगवीचीचिंतापसंगपसरियवहबंधमहल्ल-विपुलकल्लोलकलुणविलवितलोभकलकलिंतबोलबहुलं अवमाणणफेणं तिव्वखिंसणपुलंपुलप्पभूयरोगवेयणपराभवविणिवातफरूसधरिसणसमावडियकढिणकम्मपत्थरतरंगरंगंतनिच्चमच्चुभयतोयपट्ठं कसायपायालसंकुलं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवसयसहस्सजलसंचयं अणंतं उव्वेयणयं अणोरपारं महब्भयं भयंकरं पइभयं अपरिमियमहिच्छकलुसमतिवाउवेगउद्धम्ममाण-आसापिवासपायालकामरतिरागदोसबंधणबहुविहसंकप्पविपुलदगरयरयंधकारं मोहमहावत्तभोगभममाणगुप्प-माणुच्छलंतबहुगब्भवासपच्चोणियत्तपाणियं पधावित (वाहिय पा०) वसणसमावन्नरून्नचंडमारूयसमाहयामणुन्नवीचीवाकुलितभग्गफुट्टंतनिट्ठकल्लोलसंकुलजलं पमातबहुचंडदुट्ठसावयसमाहयउद्धायमाण-गपूरघोरविद्धंसणत्थबहुलं अण्णाणभमंतमच्छपरिहत्थं अनिहुतिंदियमहामगरतुरियचरियखोखुब्भमाणसंतावनिचय-चलंतचवलचंचलअत्ताणऽसरणपुव्वकयकम्मसंचयोदिन्नवज्जवेइज्जमाणदुहसयविपाकघुन्नंतजलसमूहं इड्ढिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिबद्धसत्तक-ड्ढिज्जमाणनिरयतलहुत्तसन्नविसन्नबहुला अरइरइभयविसायसोगमिच्छत्तसेलसंकडं अणातिसंताणकम्मबंधणकिलेसचिक्खिल्लसुदुत्तरं अमरनरतिरियनिरयगतिगमणकडिलपरियत्तविपुलवेलं हिंसाऽलिय अदत्तादाणमेहुणपरिग्गहारंभकरणकारावणाणु-(१३१) मोदणअट्ठविहअणिट्ठकम्मपिंडितगुरुभारक्कंतदुग्गजलोघदूरपणोलिज्जमाणउम्मुग्गनिमुग्गदुल्लभतलं सारीरमणोमयाणि दुक्खाणि उप्पियंता सातस्सायपरित्तावणमयं उब्बुइडनिबुड्डयं करेंता चउरंतमहंतमणवयग्गं रुद्दं संसारसागरं अट्ठियं अणालंबणमपतिट्ठाणमप्पमेयं चुलसीतिजोणिसयसहस्सगुविलं अणालोकमंधकारं अणंतकालं निच्चं उत्तत्थसुण्णभयसण्णसंपउत्ता वसंति उव्विगावासवसहिं जहिं २ आउयं निबंधंति पावकम्मकारी बंधवजणसयणमित्तपरिवज्जिया अणिट्ठा भवंति अणादेज्जदुव्विणीया कुठाणासणकुसेज्जकुभोयणा असुइणो कुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिया कुरूवा बहुकोहमाणमायालोभा बहुमोहा धम्मसन्नसम्मत्तपब्भट्ठा दारिद्दोवद्दवाभिभूया निच्चं परकम्मकारिणो जीवणत्थरहिया किविणा परपिंडतक्का दुक्खलद्धाहारा अरसविरसतुच्छकयकुच्छिपूरा परस्स पेच्छंता रिद्धिसक्कारभोयणविसेससमुदयविहिं निंदंता अप्पकं कयंतं च परिवयंता इह य पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं विमणसो सोएण डज्झमाणा परिभूया होंति सत्तपरिवज्जिया य सोभासिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया जहाजायपसुभूया अवियत्ता णिच्चनीयकम्मोवजीविणो लोयकुच्छणिज्जा मोघमणोरहा निरासबहुला आसापासपडिबद्धपाणा अत्थोपायाणकामसोक्खे य लोयसारे होंति अफलवंतका य सुट्ठुविय उज्जमंता तद्दिवसुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसंठवियसित्थपिंडसंचयपक्खीणदव्वसारा निच्चं अधुवधणधण्णकोसपरिभोगविवज्जिया रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा परसिरिभोगोवभोगोनिस्साणमग्गणपरायणा वरागा अकामिकाए विणेंति दुक्खं णेव सुहं णेव निव्वुतिं उवलभंति अच्चंतविपुलदुक्खसयसंपलित्ता परस्स दव्वेहिं जे अविरया, एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढोदारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चति, न य अवेयइत्ता अत्थि उ मोक्खोत्ति एवमाहंसु, णायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य अदिण्णादाणस्स फलविवागं एयं, तं ततियंपि अदिन्नादाणं हरदहमरणभयकलुसतासणपरसंतिकभेज्जलोभमूलं एवं जाव चिरपरिगतमणुगतं दुरंतं, **☆☆☆ततियं अहम्मदारं समत्तंतिबेमि ।१२ ॥द्दारं ३ ॥ जंबू ! अबंभं च चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स ☆☆☆** लोयस्स पत्थणिज्जं पंकपणयपासजालभूयं थीपुरिसनपुंसवेदचिंधं तवसंजमबंभचेरविग्घं भेदायतणबहुपमादमूलं कायरकापुरिससेवियं सुयणजणवज्जणिज्जं उड्ढनरयतिरियतिलोक्कपइट्ठाणं जरामरणरोगसोगबहुलं वधबंधविघातदुव्विघायं दंसणचरित्तमोहस्स हेउभूयं चिरपरिचितमणुगयं दुरतं, चउत्थं अधम्मदारं ।१३। तस्स य णामाणि गोन्नणि इमाणि होंति तीसं, तं०- अबंभं मेहुणं चरंतं संसग्गि सेवणाधिक्कारो संकप्पो बाहणा पदाणं दप्पो मोहो मणसंखेवो १० अणिग्गहो वुग्गहो विघाओ विभंगो विब्भमो अधम्मो असीलया गामधम्मतित्ती रति राग २० कामभोगमारो वेरं रहस्सं गुज्झं बहुमाणो बंभचेरविग्घो वावत्ति विराहणा पसंगो कामगुणो ३० त्तिविय, तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ।१४ । तं च पुण निसेवंति सुरगणा सअच्छरा मोहमोहियमती असुरभुयगगरुलविज्जुजलणदीवउदहिदिसिपवणथणिया अणवंनिपणवंनियइसिवादियभूय-वादियकंदियमहाकंदियकुहंडपयंगदेवा

Jain Education International 2010_03

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

पिसायभूयजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसमहोरगगंधव्वा तिरियजोइसविमाणवासिमणुयगणा जलयरथलयरखहयरा य **मोहपडिबद्धचित्ता अवितण्हा कामभोगतिसिया** तण्हाए बलवईए महईए समभिभूया गढिया य अतिमुच्छिया य अबंभे उस्सण्णं तामसेण भावेण अणुम्मुक्का दंसणचरित्तमोहस्स **पंजरंपिव करेंति अन्नोऽन्नं सेवमाणाभुज्जो** असुरसुरतिरियमणुअभोगरतिविहारसंपउत्ता य चक्कवट्टी सुरनरवतिसक्कया सुरवरुव्व देवलोए भरहणगणगरणियमजणवयपुरवरदोणमुहखेडकब्बडमडंबसंवाहपट्टणसहस्समंडियं थिमियमेयणीयं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुयवसभकप्पा अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणा सोमा रायवंसतिलगा रविससिसंखवरचक्कसोत्थियपडागजवमच्छकुम्मरह-वरभगभवणविमाणतुरयतोरणगोपुरमणिरयणनंदियावत्तमुसलणंगलसुरइयवरकप्परुक्खमिगवतिभद्दासणसुरूविथूभवरमउडसरिय- कुंडलकुंजरवरवसभदीव-मंदिरगरुलद्धयइंदकेउदप्पणअट्ठावयचावबाणनक्खत्तमेहमेहलवीणाजुगछत्तदामदामिणिकमंडलुकमघंटावरपोतसूइसागरकुमुदागरमगरहारगागरनेउरणगण-गरवइरकिन्नरमयूरवररायहंससारसचकोरचक्कवागमिहुणचामरखेडगपव्वीसगविपंचिवरतालियंटसिरियाभिसेयमेइणिखग्गंकुसविमलकलसभिंगारवद्धमाण-गपसत्थउत्तमविभत्तवरपुरिस- लक्खणधरा बत्तीसंवररायसहस्साणुजायमग्गा चउसट्ठिसहस्सपवरजुवतीण णयणकंता रत्ताभा पउमपम्हकोरंटगदामचंपकसुतवियवरकणकनिहसवन्ना सुजायसव्वंगसुंदरंगा महग्घवरपट्टणुग्गयविचित्तरागएणिपेणिणिम्मियदुगुल्ल-वरचीणपट्टकोसेज्जसोणीसुत्तक(ज्जाखोमिय पा०)विभूसियंगा वरसुरभिगंधवरचुण्णवासवरकुसुमभरियसिरया कप्पियच्छेयायरियसुकयरइत- मालकडगं(कुंडलं पा०)गयतुडियपवरभूसणपिणद्धदेहा एकावलिकंठसुरइयवच्छा पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जमुद्दियापिंगलंगुलिया उज्जलनेवत्थरइयचेल्लगविरायमाणा तेएण दिवाकरोव्व दित्ता सारयनवत्थणियमहुरगंभीरनिद्धघोसा उप्पन्नसमत्तरयणचक्करयणप्पहाणा नवनिहिवइणो समिद्धकोसा चाउरंता चाउराहिं सेणाहिं समणुजातिज्जमाणमग्गा तुरगवती गयवती रहवती नरवती विपुलकुलवीसुयजसा सारयससिसकलसोमवयणा सूरा तेलोक्कनिग्गयपभावलद्धसद्दा समत्तभरहाहिवा नरिंदा ससेलवणकाणणं च हिमवंतसागरंतं धीरा भुत्तूण भरहवासं जियसत्तू पवररायसीहा पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठसचियसुहा अणेगवाससयमायुवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधे य अणुभवेत्ता (न्ता) तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं। भुज्जो भुज्जो बलदेववासुदेवा य पवरपुरिसा महाबलपरक्कमा महाधणुवियट्टका महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा नरवसभा रामकेसवा भायरो सुपुरिसा वसुदेवसमुद्दविजयमादियदसाराणं पज्जुन्नपतिवसंबअनिरूद्धनिसहउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहादीण जायवाणं अद्धुट्ठाणवि कुमारकोडीणं हिययदयिया देवीए रोहिणीए देवीए देवकीए य आणंदहिययभावनंदणकरा सोलसरायवरसहस्साणुजातमग्गा सोलसदेवीसहस्सवरणयणहिययदइया णाणामणिकणगरयण-मोत्तियपवालधणधन्नसंचयरिद्धिसमिद्धकोसा हयगयरहसहस्ससामी गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंबाहसहस्सथिमियणिव्वुयपमुदितज-णविविहसासनिप्फज्जमाणमेइणिसरसरियतलागसेलकाणणआरा मुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स दाहिणड्ढवेयड्ढगिरिविभत्तस्स लवणंजलहिपरिगयस्स छव्विहकालगुणकामजुत्तस्स अद्धभरहस्स सामिका धीरकित्तिपुरिसा ओहबला अइबला अनिहया अपराजियसत्तुमद्दणरिपुसहस्समाणमहणा साणुक्कोसा अमच्छरी अचवला अचंडा मितमंजुलपलावा हसियगंभीरमहुरभणिया (महुरपरिपुण्णसच्चवयणा पा०) अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकंतपियदंसणा अमरिसणा पयंडडंडप्पयारगंभीरदरिसणिज्जा तालद्धउव्विद्धगरूलकेऊ बलवगगज्जंतदरितदप्पितमुट्ठियचाणूरमूरगा रिट्ठवसभघातिणो केसरिमुहविप्फाडगा दरितनागदप्पमहणा जमलज्जुणभंजगा महासउणिपूतणारिवू कंसमउडमोडगा जरासिंधमाणमहणा तेहि य (अब्भपडलपिंगलुज्जलेहिं पा०) अविरलसमसहियचंडमंडलसमप्पभेहिं (मंगलसयभत्तिच्छेयचित्तियखिंखिणिमणिहेमजालविइयपरिगयपेरंतकणयघंटियपयलियखिणिखिणितसुमहुरसुइसुहसद्दालसोहिएहिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सपयरगमुत्तदामलम्बन्तभूसणेहिं नरिंदवामप्पमाणरूंदपरिमंडलेहिं सीयाययवायवरिसविसदोसणासेहिं तमरयमलबहुलपडलधाडणपहारेहिं मुद्धसुहसियच्छायसमणुबद्धेहिं वयरामयवत्थिणिउणजोइयअडसहस्सवरकंचणसलागनिम्मिएहिं सुविमलरययसुट्ठुच्छइएहिं णिउणोवियमिसिमिसिंतमणिरयणसूरमंडलविंतिमिरकरनिग्गयपडिहयपुणरविपच्चोवयंतचंचलमरीइकवयं विणिम्मुयंतेहिं पा०) सूरमिरीयकवयं विणिम्मुयंतेहिं सपतिदंडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जंतेहिं विरायंता ताहि य पवरगिरिकुहरविहरणसमुट्ठियाहिं निरूवहयचमरपच्छिमसरीरसंजाताहिं अमइलसियकमलविमुकुलुज्जलितरयतगिरिसिहरविमलससिकिरणसरिसकलहोयनिम्मलाहिं पवणाहयचवलचलियसललियपण-च्चियवीइपसरियखीरोदगपवरसागरूप्पूरचंचलाहिं माणससरपसरपरिचियावासविसदवेसाहिं कणगगिरिसिहरसंसिताहिं ओवाउप्पातचवलजयिणसिग्घवेगाहिं हंसवधूयाहिं चेव कलिया नाणामणिकणगमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तडंडाहिं सललियाहिं नरवतिसिरिसमुदयप्पगासणकरीहिं वरपट्टणुग्गयाहिं समिद्धरायकुलसेवियाहिं कालागुरूपवरकुंदुरूक्कतुरूक्कधूववरवासविसदगंधुद्धुयाभिरामाहिं चिल्लिकाहिं उभयोपासंपि चामराहिं उक्खिप्पमाणाहिं सुहसीतलवातवीतियंगा अजिता अजितरहा हलमुसल (कणग पा०) पाणी संखचक्कगयसत्तिणंदगधरा पवरूज्जलसुकंतविमलकोथूभतिरीडधारी कुंडलउज्जोवियाणणा पुंडरीयणयणा एगावलिकंठरतियवच्छासिरिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंत वियसंतचित्तवणमालरतियवच्छा (प्र० लक्खणवंजणगुणोववेया) अट्ठसयविभत्तलक्खणपसत्थसुंदरविराइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगती कडिसुत्तगनीलपीतकोसिज्जवाससा पवरदित्ततेया सारयनवथणियमहुरगंभीरनिद्धघोसा नरसीहा सीहविक्कमगई अत्थमियपवररायसीहा सोमा बारवइपुन्नचंदा पुव्वकयतवप्पभावा निविट्ठसंचियसुहा अणेगवाससयमातुवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुलसद्दफरिसरसरूवगंधे अणुभवेत्ता (न्ता) तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं। भुज्जो मंडलियनरवरेंदा सबला सअंतेउरा सपरिसा सपुरोहियामच्चदंडनायकसेणावतिमंतनीतिकुसला नाणामणिरयणविपुलधणधन्नसंचयनिहीसमिद्धकोसा रज्जसिरिं विपुलमणुभवित्ता (न्ता) विक्कोसंता बलेण मत्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं, भुज्जो उत्तरकुरूदेवकुरूवणविवरपादचारिणो नरगणा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा भोगसस्सिरीया पसत्थसोमपडिपुण्णरूवदरसणिज्जा सुजातसव्वंगसुंदरंगा रत्तुप्पलपत्तकंतकरचरणकोमलतला सुपइट्ठियकुम्मचारूचलणा अणुपुव्वसुसंहयं (जायपवरं पा०) गुलीया उन्नयतणुतंबनिद्धनखा संठितसुसिलिट्ठगूढगोफा एणीकुरूविंदावत्तवट्टाणुपुव्विजंघा समुग्गनिमग्गगूढजाणूवरवारणमत्ततुल्लविक्कमविलासितगती वरतुरगसुजायगुज्झदेसा आइन्नहयव्व निरूवलेवा पमुइयवरतुरगसीहअतिरेगवट्टियकडी गंगावत्तदाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणबोहियविकोसायंतपम्हगंभीरविगडनाभी साहतसोणंदमुसलदप्पणनिगरियवरकणगच्छरूसरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जुगसमसहियजच्चतणुकसिणणिद्धआदेज्जलडहसूमालमउयरोमराई झसविहगसुजातपीणकुच्छी झसोदरा पम्हविगडनाभा संनतपासा संगयपासा सुंदरपासा सुजातपासा मितमाइयपीणरइयपासा अकरंडुयकणगरूयगनिम्मलसुजायनिरूवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसमतलउवइयविच्छिन्नपिहुलवच्छा जुयसंनिभपिणरइयपीवरपउट्ठसंठियसुसिलि-ट्ठविसिट्ठलट्ठसुनिचितघणथिरसुबद्धसंधी पुरवरवरफलिहवट्टियभुया भुयईसरविपुलभोगआयाण फलिउच्छूढदीहबाहू रत्ततलोवतियमउयमंसलसुजायलक्खणपसत्थअच्छिद्दजालपाणी पीवरसुजायकोमलवरंगुली तंबतलिणसुइरूइलनिद्धणक्खा निद्धपाणिलेहा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा संखपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसासोवत्थियपाणिलेहा रविससिसंखवरचक्कदिसासोवत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा वरमहिसवराहसीहसद्दूलसिंहनागरवरपडिपुन्नविउल खंधा चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसग्गीवा अवट्टियसुविभत्तचित्तमंसू उवचियमंसलपसत्थसद्दूलविपुलहणुया ओयवियसिलप्पवालबिंबफलसंनिभाधरट्ठा पंडुरससिसकलविमलसंखगोखीरफेणकुंददगरयमुणालियाधवलदंतसेढी अखंडदंता अप्फुडियदंता अविरलदंता सुणिद्धदंता सुजायदंता एगदंतसेढिव्व अणेगदंता हुयवहनिद्धंतधोवतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा गरूलायतउज्जुतुंगनासा अवदालियपोंडरीयनयणा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोकासियधवलपत्तलच्छा आणामियचावरूइलकिण्हब्भराजिसंठियसंगयाययसुजायभुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमंसलकवोलदेसभागा अचिरूग्गयबालचंदसंठियमहानिडाला उडुवतिरिव पडिपुन्नसोमवयणा छत्तागारूत्तमंगदेसा घणनिचियसुबद्धलक्खणुन्नयकूडागारनिभपिंडिय-ग्गसिराहुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्तकेसंतकेसभुमी सामलीपोंडघणनिचियछोडियमिउविसतपसत्थसुहुमल-क्खणसुगंधिसुंदरभुयमोयगभिंगनील-कज्जलपहट्ठभमरगणनिद्धनिगुरूंबनिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धया सुजातसुविभत्तसंगयंगमंगा लक्खणवंजणगुणोववेया पसत्थबत्तीसलक्खणधरा हंसस्सरा कुंचस्सरा दुंदुभिस्सरा सीहस्सरा वग्घ (ओघ) सरा मेघसरा सुस्सरासुस्सरनिग्घोसा वज्जरिसहनारायसंघयणा समचउरंससंठाणसंठिया छायाउज्जोवियंगमंगा पसत्थच्छवी निरातंका कंकग्गहणी कवोतपरिणामा सगुणिपोसपिट्ठंतरोरूपरिणया पउमुप्पलसरिसगंधुस्सासससुरभिवयणा अणुलोमवाउवेगा अबदायनिद्धकाला विग्गहियउन्नयकुच्छी अमयरसफलाहारा तिगाऊयसमूसिया तिपलिओवमट्ठितीका तिन्नि य पलिओवमाइं परमाउंपालयित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं, पमयावि य तेसिं होंति सोम्मा सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता अतिकंतविसप्पमाणमउयसुकुमालकुम्मसंठियविसिट्ठसिलिट्ठचलणा उज्जुमउयपीवरसुसाहतंगुलीओ अब्भुन्नतरतितततलिणतंबसुइनिद्धनखा रोमरहियवट्टसंठियअजहन्नपसत्थलक्खणअकोप्पजंघजुयला सुणिम्मितसुनिगूढजाणू मंसलपसत्थसुबद्धसंधी कयलीखंभातिरेकसंठियनिव्वणसुकुमालमउयकोमलअविरलसमसहितसुजायवट्टपीवरनिरन्तरोरू अट्ठावयवीइपट्टसंठियपसत्थविच्छिन्नपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुबद्धजहणवरधारिणीओ वज्जविराइयपसत्थलक्खणनिरोदरीओ तिवलिवलियतणुनमियमज्झियाओ उज्जुयसमसहियजच्चतणुकसिणनिद्धआदेज्जलडहसुकुमालमउयसुविभत्तरोमरातीओ गंगावत्तगपदाहिणावत्ततरंगभंगरविकिरणतरूणबोधितआकोसायंत-पउमगंभीरविगडनाभा अणुब्भडपसत्थसुजातपीणकुच्छी सन्नतपासा सुजातपासा संगतपासा मियमायियपीणरतितपासा अकरंडुयकणगरूयगनिम्मलसुजायनिरूवहयगायलट्ठी कंचणकलसपमाणसमसहियलट्ठचुचुयआमेलगजमलजुयलवट्टियपओहराओ भुयंगअणुपुव्वतणुयगोपुच्छवट्टसमसहियनमिआदेज्जलडहबाहा तंबनहा मंसलग्गहत्था कोमलपीवरवरंगुलीया निद्धपाणिलेहा ससिसूरसंखचक्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा पीणुण्णयकक्खवत्थिप्पदेसपडिपुन्नगलकवोला चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगासपीवरपलंबकुंचितवराधरा सुंदरोत्तरोट्ठा दधिदगरयकुंदचंदवासंतिमउलअच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पलपउमपत्तसुकुमालतालुजीहा कणवीरमुउलऽकुडिलऽब्भुन्नयउज्जुतुंगनासा सारदनवकमलकुमुतकुवलयदलनिगरसरिसलक्खणपसत्थअजिम्हकंतनयणा आनामियचावरूइलकिण्हब्भराइसंगयसुजायतणुकसिणनिद्धभुमगा अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुस्सवणा पीणमट्ठगंडलेहा चउरंगुलविसालसमनिडाला कोमुदिरयणिकरविमलपडिपुन्नसोमवदणा छत्तुन्नयउत्तमंगा अकविलसुसिणिद्धदीहसिरया छत्तज्झयजूवथूभदामिणिकमंडलुकल-सवाविसोत्थियपडागजवमच्छकुम्मरथवरमकरज्झयअंकथालअंकुसअट्ठावयसुपइट्ठअमरसिरियाभिसेयतोरणमेइणिउदधिवरपवरभवण-गिरिवरवरायससललियगयउसभसीहचामरपसत्थबत्तीसलक्खणधरीओ हंससरिच्छगतीओ कोइलमहुरगिराओ कंता सव्वस्स अणुमयाओ ववगयवलिपलितवंगदुव्वन्नवाधिदोहग्गसोयमुक्काओ उच्चत्तेण य नराण थोवूणमूसियाओ सिंगारागारचारूवेसाओ सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणा लावन्नरूवजोव्वणगुणोववेया नंदणवणविवरचारिणीओ व्व अच्छराओ उत्तरकुरूमारुसच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिज्जियाओ तिन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालयित्ता ताओऽवि उवणमंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं ।१५। मेहुणसन्नासंपगिद्धा य मोहभरिया सत्थेहिं हणंति एक्कमेक्कं विसयविसउदीरएसु, अवरे परदारेहिं हम्मंति विमुणिया धणनासं सयणविप्पणासं च पाउणंतिपरस्स दाराओ जे अविरया, मेहुणसन्नसंपगिद्धा य मोहभरिया अस्सा हत्थी गवा य महिसा मिगा य मारेंति एक्कमेक्कं, मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरूज्झंति, मित्ताणि खिप्पं भवंति सत्तू, समये धम्मे गणे य भिंदंति पारदारी, धम्मगुणरया य बंभयारी खणेण उल्लोट्टए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरित्ताओ जसमन्तो सुव्वया य पावेंति अ (जस पा०) कित्तिं रोगत्ता वाहिया पवड्ढिंति रोयवाही, दुवे य लोया दुआराहगा भवंति इहलोए चेव परलोए चेव परस्स दारओ जे अविरया, तहेव केई परस्स दारं गवेसमाणा गहिया हया य बद्धरूद्धा य एवं जाव गच्छंति विपुलमोहाभिभूयसन्ना मेहूणमूलं च सुव्वए तत्थ २ वत्तपुव्वा संगामा जणक्खयकरा सीयाए दोवईए कए रूप्पिणीए पउमावईए ताराए कंचणाए रत्तसुभद्दाए अहिल्लियाए सुवन्नगुलियाए किन्नरीए सुरूवविज्जुमतीए रोहिणीए य अन्नेसु य एवमादिएसु बहवो महिलाकएसु सुव्वंति अइक्कंता संगामा गामधम्ममूला इहलोए ताव नट्ठा परलोएवि य णट्ठा महया मोहतिमिसंधकारे घोरे तसथावरसुहुमबादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तसाहारणसरीरपत्तेयस रीरेसु य अंडजपोतजजराउयरसजसंसेइमसंमुच्छिमउब्भियउववादिएसु य नरगतिरियदेवमाणुसेसु जरामरणरोगसोगबहुले पलिओवमसागरोवमाइं अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति जीवा मोहवससंनिविट्ठा, एसो सो अबंभस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारूणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, न य अवेदइत्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति एवमाहंसु, नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य अबंभस्स फलविवागं एयं, तं अबंभंपि चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्जं एवं चिरपरिचियमणुगयं दुरंतं ☆☆☆ **चउत्थं अधम्मदारं समत्तंतिबेमि ।१६॥ दारं ।४॥ जंबू ! इत्तो परिग्गहो पंचमो** ☆☆☆ उ नियमा णाणामणिकणगरयणमहरिहपरिमलसपुत्तदारपरिजणदासीदासभयगपेसहयगयगोमहिस उट्टखरअयगवेलगसीयासगडरहजाणजुग्गसंदणसयणा-सणवाहणकुवियधणधन्नपाणभोयणाच्छायणगंधमल्लभायणभवणविहिं चेव बहुविहीयं भरहं णगरगरणियमजणवयपुरवरदोण-मुहखेडकब्बडमडंबसंबाहपट्टणसहस्सपरिमंडियं थिमियमेइणीयं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं अपरिमियमणंततण्हमणुगयमहिच्छसारनिरयमूलो लोभकलिकसायमहक्खंधो चिंतासयनिचियविपुलसालो गारवपविरल्लियग्गविडवो नियडितयापत्तपल्लवधरो पुप्फफलं जस्स कामभोगा आयासविसूरणाकलहपकंपियग्गसिहरो नरवतिसंपूजितो बहुजणस्स हिययदइओ इमस्स मोक्खवरमोत्तिमग्गस्स फलिहभूओ चरिमं अहम्मदारं ।१७। तस्स य नामाणि इमाणि गोण्णाणि होंति तीसं, तं०-परिग्गहो संचयो चयो उवचओ निहाणं संभारो संकरो आयरो पिंडो दव्वसारो १० तहा महिच्छा पडिबंधो लोहप्पा महप्प(प्र० परिव्वआ) इ (द्धी पा०) उवकरणं संरक्खणा य भारो संपाउप्पायको कलिकरंडो पवित्थरो २० अणत्थो संथवो अगुत्ती आयासो अवियोगो अमुत्तीतण्हा अणत्थको आसत्ती असंतोसोत्तिविय ३०, तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं ।१८। तं च पुण परिग्गहं ममायंति लोभघत्था भवणवरविमाणवासिणो परिग्गहरूती परिग्गहे विविहकरणबुद्धी देवनिकाया य असुरभुयगगरूलसुवण्णविज्जुजलणदीवउदहिदिसिपवणथणियअणवंनियपणवंनियइ-सिवातियभूतवाइयकंदियमहाकंदियकुहंडपतंगदेवा पिसायभूयजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसमहोरगगंधव्वा य तिरियवासी पंचविहा जोइसिया य देवा बहस्सतीचंदसूरसुक्कसनिच्छरा राहुधूमकेउबुधा य अंगारका य तत्ततवणिज्जकणयवण्णाजे य गहा जोइसम्मि चारं चरंति केऊ य गतिरतीया अट्ठावीसतिविहा य नक्खत्तदेवगणा नाणासंठाणसंठियाओ य तारगाओ ठियलेस्सा चारिणो य अविस्साममंडलगती उवरिचरा उडढलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सार आणयपाणयआरणअच्चुया कप्पवरविमाणवासिणो सुरगणा गेवेज्जा अणुत्तरा दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महिड्ढिका उत्तमा सुरवरा एवं च ते चउव्विहा सपरिसावि देवा ममायंति भवणवाहणजाणविमाणसयणासणाणि य नाणाविहवत्थभूसणा पवरपहरणाणि य नाणामणिपंचवन्नदिव्वं च भायणविहिं नाणाविहकामरूवे वेउव्वितअच्छरगणसंघाते दीवसमुद्दे दिसाओ विदिसाओ चेतियाणि वणसंडे पव्वते य गामनगराणि य आरामुज्जाणकाणणाणि य कूवसरतलागवावीदीहियदेवकुलसभप्पवावसहिमाइयाइं बहुकाइं कित्तणाणि य परिगेण्हित्ता परिग्गहं विपुलदव्वसारं देवावि सइंदगा न तित्तिं न तुट्ठिं उवलभंति अच्चंतविपुललोभाभिभूतसत्ता वासहरइक्खुगारवट्टपव्वयकुंडलरूचगवरमाणुसोत्तरकालोदधिल-वणसलिलदहपतिरतिकरअंजणकसेलदहिमुहऽवपातुप्पायकंचणकचित्तविचित्तजमकवरसिहरकूडवासी वक्खारअकम्मभूमिसु सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमिसु,

www.jainelibrary.org For Private & Personal Use Only

जेऽवि य नरा चाउरंतचक्कवट्टी वासुदेवा बलदेवा मंडलीया इस्सरा तलवरा सेणावती इब्भा सेट्ठी रट्ठिया पुरोहिया कुमारा दंडणायगा माडंबिया सत्थवाहा कोडुंबिया अमच्चा एए अन्ने य एवमाती परिग्गहं संचिणंति अणंतं असरणं दुरंतं अधुवमणिच्चं असासयं पावकम्मनेम्मं अवकिरियव्वं विणासमूलं वहबंधपरिकिलेसबहुलं अणंतसकिलेसकारणं, ते तं धणकणगरयणनिचयं पिंडिंता चेव लोभघत्था संसारं अतिवयंति सव्वदुक्ख (प्र० भय) संनिलयणं, परिग्गहस्सेव य अट्ठाए सिप्पसयंसिक्खए बहुजणो कलाओ य बावत्तरिं सुनिपुणाओ लेहाइयाओ सउणरूयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ चउसट्ठिं च महिलागुणे रतिजणणे सिप्पसेवं असिमसिकिसिवाणिज्जं ववहारं अत्थइसत्थच्छरूप्पवायं विविहाओ य जोगजुंजणाओ अन्नेसु एवमादिएसु बहूसु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए संचिणंति मंदबुद्धी. परिग्गहस्सेव य अट्ठाए करंति पाणाण वहकरणं अलियनियडिसा इसंपओगे परदव्वअभिज्जा सपरदारअभिगमणासेवणाए आयासविसूरणं कलहभंडणवेराणि य अवमाणणविमाणणाओ इच्छामहिच्छप्पिवाससततितिसिया तण्हगेहिलोभघत्था अत्ताणा अणिग्गहिया करेंति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे परिग्गहे चेव होंति नियमा सल्ला दंडा य गारवा य कसाया सन्ना य कामगुणअण्हवगा इंदियलेसाओ सयणसंपओगा सचित्ताचित्तमीसगाइं दव्वाइं अणंतकाइं इच्छंति परिघेत्तुं सदेवमणुयासुरम्मि लोए लोभपरिग्गहो जिणवरेहिं भणिओ नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि सव्व-(१३२) जीवाणं सव्वलोए ।१९। परलोगम्मि य नट्ठा तमं पविट्ठा महयामोहमोहियमती तिमिसंधकारे तसथावरसुहुमबादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तग एवं जाव परियट्टंति दीहमद्धं जीवा लोभवससंनिविट्ठा, एसो सो परिग्गहस्स फलविवाओ इहलोइओ परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारूणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न अवेततित्ता अत्थि हु मोक्खेत्ति एवमाहंसु, नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य परिग्गहस्स फलविवागं. एसो सो परिग्गहो पंचमो उ नियमा नाणामणिकणगरयणमहरिह एवं जाव इमस्स मोक्खवरमोत्तिमग्गस्स फलिहभूयो। चरिमं अधम्मदारं समत्तं ।२०। 'एएहिं पंचहिं असंवरेहिं (प्र० आसवेहिं) रयमादिणित्तुमणुसमयं। चउविहगइपज्जंतं अणुपरियट्टंति संसारं ॥४॥ सव्वगईपक्खंदे काहिंति अणंतए अकयपुण्णा। जे य न सुणंति धम्मं सुणिऊण य जे पमायंति ॥५॥ अणुसिट्ठंपि बहुविहं मिच्छादिट्ठी य जे नरा अहमा (प्र० अबुद्धिया) ।बद्धनिकाइयकम्मा सुणंति धम्मं न य करेन्ति ॥६॥ किं सक्का काउं जे जं नेच्छइ ओसहं मुहा पाउं। जिणवयणं गुणमहुरं विरेयणं सव्वदुक्खाणं ॥७॥ ☆☆☆**पंचेव (प्र० ते) उज्झिऊणं पंचेव य रक्खिऊण भावेणं। कम्मरयविप्पमुक्का सिद्धिवरमणुत्तरं जंति ॥८॥ द्वारं ५ ॥ जंबू !-**☆☆☆'एत्तो संवरदाराइं पंच वोच्छामि आणुपुव्वीए। जह भणियाणि भगवया सव्वदुहविमोक्खणट्ठाए ॥९॥ पढमं होइ अहिंसा बितियं सच्चवयणंति पण्णत्तं। दत्तमणुन्नाय संवरो य बंभचेरमपरिग्गहत्तं च ॥१०॥ तत्थ पढमं अहिंसा तसथावरसव्वभूयखेमकरी ।तीसे सभावणाए किंचि वीच्छं गुणुद्देसं ॥११॥ ताणि उ इमाणि सुव्वय ! महव्वयाइ (लोकहियसवयाइं) सुयसागरदेसियाइं तवसंजममहव्वयाइं सीलगुणवरव्वयाइं सच्चज्जवव्वयाइं नरगतिरियमणुयदेवगतिविवज्जकाइं सव्वजिणसासणगाइं कम्मरयविदारगाइं भवसयविणासणकाइं दुहसयविमोयणकाइं सुहसयपवत्तणकाइं कापुरिसदुरूत्तराइं (सप्पुरिसतीरियाइं पा०) सप्पुरिसनिसेवियाइं निव्वाणगमणमग्गसग्गप्पणायकाइं (याणगाइं पा०) संवरदाराइं पंच कहियाणि उ भगवया, तत्थ पढमं अहिंसा जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स भवति-दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा निव्वाणं निव्वुई समाही सत्ती कित्ती कंती रती य विरती य सुयंगतित्ती १० दया विमुत्ती खन्ती सम्मत्तारहणा महंती बोही बुद्धी धिती समिद्धी रिद्धी २० विद्धी ठिती पुट्ठी नंदा भद्दा विसुद्धी लद्धी विसिट्ठदिट्ठी कल्लाणं मंगलं ३० पमोओ विभूती रक्खा सिद्धावासो अणासवो केवलीण ठाणं सिवं समिई सीलं संजमो ४० त्ति य सीलपरिघरो संवरो य गुत्ती ववसाओ उस्सओ जन्नो आयतणं जतणमप्पमातो आसासो ५० वीसासो अभओ सव्वस्सवि अमाघाओ चोक्ख पवित्ती सूती पूया विमल पभासा य निम्मलतर ६० त्ति एवमादीणि नियगुणनिम्मियाइं पज्जवनामाणि होंति अहिंसाए भगवतीए। २१। एसा सा भगवती अहिंसा जा सा भीयाणंविव सरणं पक्खीणंपिव गमणं तिसियाणंपिव सलिलं खुहियाणंपिव असणं समुद्दमज्झेव पोतवहणं चउप्पयाणंव

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसमपयं दुहट्ठियाणं (प्र० दुहदुहियाणं) व ओसहिबलं अडवीमज्झे सत्थगमणं एत्तो बिसिट्ठतरिका अहिंसा जा सा पुढवीजलअगणिमारुयवणस्सइबीजहरितजलचरथलचरखहचरतसथावरसव्वभूयखेमकरी, एसा भगवती अहिंसा जा सा अपरिमियनाणदंसणधरेहिं सीलगुणविणयतवसंयमनायकेहिं तित्थंकरेहिं सव्वजगजीववच्छलेहिं तिलोगमहिएहिं जिण चंदेहिं सुट्ठु दिट्ठा(उवलद्धा) ओहिजिणेहिं विण्णाया उज्जुमतीहिं विदिट्ठा विपुलमतीहिं विविदिता पुव्वधरेहिं अधीता वेउव्वीहिं पतिन्ना आभिणिबोहियनाणीहिं सुयनाणीहिं मणपज्जवनाणीहिं केवलनाणीहिं आमोसहिपत्तेहिं खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं बीजबुद्धीहिं कुट्ठबुद्धीहिं पदाणुसारीहिं संभिन्नसोतेहिं सुयधरेहिं मणबलिएहिं वयबलिएहिं कायबलिएहिं नाणबलिएहिं दंसणबलिएहिं चरित्तबलिएहिं खीरासवेहिं मधुआसवेहिं सप्पियासवेहिं अक्खीणमहाणसिएहिं चारणेहिं विज्जाहरेहिं (प्र० जंघाचारणेहिं विज्जाचारणेहिं) चउत्थभत्तिएहिं एवं जाव छम्मासभत्तिएहिं उक्खित्तचरएहिं निक्खित्तचरएहिं अंतचरएहिं पंतचरएहिं लूहचरएहिं समुदाणचरएहिं अन्नइलायएहिं मोणचरएहिं तज्जायसंसट्ठकप्पिएहिं उवनिहिएहिं सुद्धेसणिएहिं संखादत्तिएहिं दिट्ठलाभिएहिं अदिट्ठलाभिएहिं पुट्ठलाभिएहिं आयंबिलिएहिं पुरिमड्ढिएहिं एक्कासणिएहिं निव्वितिएहिं भिन्नपिंडवाइएहिं परिमियपिंडवाइएहिं अंताहारेहिं पंताहारेहिं अरसाहारेहिं विरसाहारेहिं लूहाहारेहिं तुच्छाहारेहिं अंतजीवीहिं पंतजीवीहिं लूहजीवीहिं तुच्छजीवीहिं उवसंतजीवीहिं पसंतजीवीहिं विवित्तजीवीहिं अखीरमहुसप्पिएहिं अमज्जमंसासिएहिं ठाणाइएहिं पडिमठइहि ठाणुक्कडिएहिं वीरासणिएहिं णेसज्जिएहिं डंडाइएहिं लगंडसाईहिं एगपास(प्र० सप्पि)गेहिं आयावएहिं अप्पाव(प्र० पाउ)एहिं अणिट्ठुभएहिं अकंडूयएहिं धूतकेसमंसुलोमनखेहिं सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहिं समणुचिन्ना सुयधरविदितत्थकायबुद्धीहिं धीरमतिबुद्धिणो य जे ते आसीविसउग्गतेयकप्पा निच्छयववसाय(विणीय पा०)पज्जत्तकयमतीया णिच्चं सज्झायज्झाणअणुबद्धधम्मज्झाणा पंचमहव्वयचरित्तजुत्ता समिता समितिसु समितपावा छव्विहजगवच्छला निच्चमप्पमत्ता एएहिं अन्नेहि य जा सा अणुपालिया भगवती इमं च पुढवीदगअगणिमारुयतरुगणतसथावरसव्वभूयसं- यमदयट्ठयाते सुद्धं उञ्छं गवेसियव्वं अकतमकारियमणाहूयमणुद्दिट्ठं अकीयकडं नवहि य कोडीहिं सुपरिसुद्धं दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्कं उग्गमउप्पायणेसणासुद्धं ववगयचुयचावियच- त्तदेहं च फासुयं च न निसिज्जकहापओयणक्खासु ओवणीयंति न तिगिच्छामंतमूलभेसज्जकज्जहेउं न लक्खणुप्पायसुमिणजोइसनिमित्तकहप्पउत्तं नवि डंभणाए नवि रक्खणाते नवि सासणाते नवि दंभणरक्खणसासणाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि वंदणाते नवि माणणाते नवि पूयणाए नवि वंदणमाणणपूयणाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि हीलणाते नवि निंदणाते नवि गरहणाते नवि हीलणनिंदणगरहणाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि भेसणाते नवि तज्जणाते नवि तालणाते नवि भेसणतज्जणतालणाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि गारवेणं नवि कुह(प्र० प्प)णयाते नवि वणीमयाते नवि गारवकुह(प्र० प्प)वणीमयाए भिक्खं गवेसियव्वं नवि मित्तयाए नवि पत्थणाए नवि सेवणाए नवि मित्तपत्थणसेवणाते भिक्खं गवेसियव्वं अन्नाए अगढिए अदुट्ठे अदीणे अविमणे अकलुणे अविसाती अपरितंतजोगी जयणघडणकरणचरियविणयगुणजोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते निरते, इमं च णं सव्वजीवरक्खणदयट्ठाते पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभावियं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विउवसमणं। २२। तस्स इमा पंच भावणातो पढमस्स वयस्स होंति पाणातिवायवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पढमं ठाणगमणगुणजोगजुंजणजुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए ईरियव्वं कीडपयंगतसथावरदयावरेण निच्चं पुप्फफलतयपवालकंदमूलदगमट्टियबीजहरियपरिव- ज्जिएण संमं, एवं खलु सव्वपाणा न हीलियव्वा न निंदियव्वा न गरहिव्वा न हिंसियव्वा न छिंदियव्वा न भिंदियव्वा न वहेयव्वा न भयं दुक्खं च किंचि लब्भा पावेउं एवं ईरियासमिति- जोगेण भावितो भवति अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू, बितीयं च मणेण अपावएणं पावकं अहम्मियं दारुणं निस्संसं वहबंधपरिकिलेसबहुलं जरा(भय पा०)मरणपरिकिलेससंकिलिट्ठं न कयावि मणेण पावतेणं पावगं किंचिवि झायव्वं एवं मणसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू, ततियं च वतीते अपावियाते(प्र० अहम्मियं दारुणं नीसंसं वहबंधपरिकिलेससंकिलिट्ठं न कयाइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वईए पावियाए) पावकं न किंचिवि भासियव्वं एवं वतिसमिति- जोगेण भावितो भवति अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसओ संजसो सुसाहू, चउत्थं आहारएसणाए सुद्धं उञ्छं गवेसियव्वं अन्नाए (अगढिते पा०)(प्र० अगिद्धे) अदुट्ठे अदीणे (प्र० अविमणे) अकलुणे अविसादी अपरितंतजोगी जयणघडणकरणचरियविणयगुणजोगसंपओगजुत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खचरियं उंछं घेत्तूण आगतो गुरुजणस्स पासं गमणागमणातिचारे पडिक्कमणपडिक्कंते आलोयदायणं च दाऊण गुरुजणस्स गुरुसंदिट्ठस्स वा जहोवएसं निरइयारं च अप्पमत्तो, पुणरवि अणेसणाते पयतो पडिक्कमित्ता पसंते आसीणसुहनिसन्ने मुहुत्तमेत्तं च झाणसुहजोगनाणसज्झायगोवियमणे धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहियमणे सद्धासंवेगनिज्जरमणे पवतण-वच्छल्लभावियमणे उट्ठेऊण य पहट्ठतुट्ठे जहारायणियं निमंतइत्ता य साहवे भावओ य विइण्णे य गुरुजणेणं उपविट्ठे संपमज्जिऊण ससीसं कायं तहा करतलं अमुच्छिते अगिद्धे अगढिए अगरहिते अणज्झोववण्णे अणाइले अकुद्धे अणत्तट्ठिते असुरसुरं अचवचवं अदुतमविलंबियं अपडिसाडिं आलोयभायणे जयं पय(प्र० जयमप्पम)त्तेण ववगयसंजोगमणिंगालं च विगयधूमं अक्खोवंजणाणुलेवणभूयं संजमजायामायानिमित्तं संजमभारवहणट्ठयाए भुंजेज्जा (प्र० भोत्तव्वं) पाणधारणट्ठयाए संजएण समियं एवं आहारसमितिजोगेणं भाविओ भवति अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू, पंचमं आदाणनिक्खेवणासमिई पीढफलगसिज्जासंथारगवत्थपत्तकंबलदंडगरयहरणचोलपट्टगमुहपो- त्तिगपायपुञ्छणादी एयंपि संजमस्स उववूहणट्ठयाए वातातवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्ठयाए उवगरणं रागदोसरहितं परिहरितव्वं संजमेणं निच्चं पडिलेहणपप्फोडणपमज्जणाए अहो य राओ अ अप्पमत्तेणं होइ सययं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायणभंडोवहिउवगरणं एवं आयाणभंडनिक्खेवणासमितिजोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा असबलमसंकिलिट्ठनिव्वणच- रित्तभावणाए अहिंसए संजते सुसाहू, एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होति सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिवि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो (प्र० अपरिस्सावी) असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुन्नातो, एवं पढमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं आराहियं आणाते अणुपालियं भवति, एयं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं सुदेसितं पसत्थं ☆☆☆ **पढमं संवरदारं समत्तंतिबेमि ।२३ ॥ संवरद्दारं १(६) ॥जंबू ! बितियं** ☆☆☆ च सच्चवयणं सुद्धं सुचियं सिवं सुजायं सुभासियं सुव्वयं सुकहियं सुदिट्ठं सुपतिट्ठियं सुपइट्ठियजसं सुसंजमियवयणबुइयं सुरवरनरवसभपवरबलवगसुविहिय- जणबहुमयं परमसाहुधम्मचरणं तवनियमपरिग्गहियं सुगतिपहदेसकं च लोगुत्तमं वयमिणं विज्जाहरगगणगमणविज्जाण साहकं सग्गमग्गसिद्धिपहदेसकं अवितहं तं सच्चं उज्जुयं अकुडिलं भूयत्थं अत्थतो विसुद्धं उज्जोयकरं पभासकं भवति सव्वभावाण जीवलोगे अविसंवादि जहत्थमधुरं पच्चक्खं दयिवयंव जं तं अच्छेरकारकं अवत्थतरेसु बहुएसु माणुसाणं सच्चेण महासमुद्दमज्झेवि चिट्ठंति न निमज्जंति मूढाणियावि पोया सच्चेण य उदगसंभमंमिवि न वुज्झन्ति न य मरंति थाहं ते लभंति सच्चेण य अगणिसंभमंमिवि न डज्झंति उज्जुगा मणूसा सच्चेण य तत्ततेल्लतउलोहसीसकाइं छिवंति धरेंति न य डज्झंति मणूसा पव्वयकडकाहिं मुच्चंते न य मरंति सच्चेण य परिग्गहीया असिपंजरगया छुट्टंति समराओवि णिइंति अणहा य सच्चवादी वहबंधभियोगवेरघोरेहिं पमुच्चंति य अमित्तमज्झाहिं नियंति अणहा य सच्चवादी सादेव्वाणि (प्र०सण्णिज्झाणिवि) य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रताणं, तं सच्चं भगवं तित्थकरसुभासियं दसविहं चोद्दसपुव्वीहिं पाहुडत्थविदितं महरिसीण य समयप्पदिन्नं (महरिसिसमयपइन्नचिन्तं पा०) देविंदनरिंदभासियत्थं वेमाणियसाहियं महत्थं मंतोसहिविज्जासाहणत्थं चारणगमणसमणसिद्धविज्जं मणुयगणाणं वंदणिज्जं अमरगणाणं अच्चणिज्जं असुरगणाणं च पूयणिज्जं अणेगपासंडिपरिग्गहितं जं तं लोकंमि सारभूयं गंभीरतरं महासमुद्दाओ थिरतरगं मेरुपव्वयाओ सोमतरगं चंदमंडलाओ दित्ततरं सूरमंडलाओ विमलतरं सरयनहयलाओ सुरभितरं गंधमादणाओ जेवियं लोगम्मि अपरिसेसा मंतजोगा जवा य विज्जा य जंभका य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सव्वाणिवि ताइं सच्चे पइट्ठियाइं. सच्चंपिय

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजमस्स उवरोहकारकं किंचि न वत्तव्वं हिंसासावज्जसंपउत्तं भेयविकहकारकं अणत्थवायकलहकारकं अणत्थं वज्जं अव(प्र० आ)वायविवायसंपउत्तं वेलंबं ओजधेज्जबहुलं निल्लज्जं लोयगरहणिज्जं दुद्दिट्ठं दुस्सुयं अमुणियं अप्पणो थवणा परेसु निंदा न तंसि मेहावी ण तंसि धन्नो न तंसि पियधम्मो न तं कूलीणो न तंसि दाणवती न तंसि सूरो न तंसि पडिरूवो न तंसि लट्ठो न पंडिओ न बहुस्सुओ नवि य तं तवस्सी ण यावि परलोगणिच्छियमती सि सव्वकालं जातिकुलरूववाहिरोगेण वावि जं होइ वज्जणिज्जं दुहिलं(पा०दूहओ)उवयारमतिक्कंतं एवंविहं सच्चंपि न वत्तव्वं, अह केरिसकं पुणाइं सच्चं तु भासियव्वं ?, जं तं दव्वेहिं पज्जवेहि य गुणेहिं कम्मेहिं बहुविहेहिं सिप्पेहिं आगमेहि य नामक्खायनिवाउवसग्गतद्धियसमाससंधिपदहेउजोगियउणादिकिरियाविहाणधातुसरविभत्तिवन्नजुत्तं तिकल्लं दसविहंपि सच्चं जह भणियं तह य कम्मुणा होइ दुवालसविहा होइ भासा वयणंपिय होइ सोलसविहं, एवं अरहंतमणुन्नायं समिक्खियं संजएण कालंमि य वत्तव्वं ।२४। इमं च अलियपिसुणफरुसकडुयचवलयवयणप- रिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाणं विओसमणं, तस्स इमा पंच भावणाओ बितियस्स वयस्स अलियवयणस्स वेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पढमं सोऊणं संवरट्ठं परमट्ठं सुट्ठु जाणिऊण न वेगियं न तुरियं न चवलं न कडुयं न फरुसं न साहसं न य परस्स पीलाकरं सावज्जं सच्चं च हियं च मियं च गाहगं च सुद्धं संगयमकाहलं च समिक्खितं संजतेण कालंमि य वत्तव्वं, एवं अणुवीतिसमितिजोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणंनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपुन्नो, बितियं कोहो ण सेवियव्वो, कुद्धो चंडिक्किओ मणूसो अलियं भणेज्ज पिसुणं भणेज्ज फरुसं भणेज्ज अलियं पिसुणं फरुसं भणेज्जा कलहं करेज्जा वेरं करेज्ज विकहं करेज्जा कलहं वेरं विकहं करेज्जा सच्चं हणेज्ज सीलं हणेज्ज विणयं हणेज्ज सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज वेसो हवेज्ज वत्थुं भवेज्ज गम्मो भवेज्ज वेसो वत्थुं गम्मो भवेज्ज एयं अन्नं च एवमादियं भणेज्ज कोहग्गिसंपलित्तो तम्हा कोहो न सेवियव्वो, एवं खंतीइ भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवलयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो, ततियं लोभो न सेवियव्वो, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं खेत्तस्स व वत्थुस्स व कतेण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कित्तीए लोभस्स व कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं रिद्धीय व सोक्खस्स व कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं भत्तस्स व पाणस्स व कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं पीठस्स व फलगस्स व कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सेज्माए व संधारकस्स व कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं वत्थस्स व पत्तस्स व कएण लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कंबलस्स व पायपुंछणस्स व कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सीसस्स व सिस्सिणीए व कएण, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं अन्नेसु य एवमादिएसु बहुसु कारणसतेसु, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं तम्हा लोभो न सेवियव्वो, एवं मुत्तीय भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो, चउत्थं न भाइयव्वं, भीतं खु भया अइंति लहुयं भीतो अबितिज्जओ मणूसो भीतो भूतेहिं घिप्पइ भीतो अन्नंपिहु भेसेज्जा भीतो तवसंजमंपिहु मुएज्जा भीतो य भरं न नित्थरेज्जा सप्पुरिसनिसेवियं च मग्गं भीतो न समत्थो अणुचरिउं तम्हा न भातियव्वं भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मच्चुस्स वा अन्नस्स वा एगस्स वा (एवमादियस्स वा पा०)एवं धेज्जेण भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो, पंचमकं हासं न सेवियव्वं, अलियाइं असंतकाइं जंपंति हासइत्ता परपरिभवकारणं च हासं परपरिवायप्पियं च हासं परपीलाकारगं च हासं भेदविमुत्तिकारकं च हासं अन्नोन्नजणियं च होज्ज हासं अन्नोन्नगमणं च होज्ज मम्मं अन्नोन्नगमणं च होज्ज कम्मं कंदप्पाभियोगगमणं च होज्ज हासं आसुरियं किव्विसत्तणं च जणेज्ज हासं तम्हा हासं न सेवियव्वं, एवं मोणेण भाविओ भवइ अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरो सच्चज्जवसंपन्नो, एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिवि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुन्नाओ, एवं बितियं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं अणुपालियं आणाए आराहियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं, सिद्धवरसासणमिणं आघवितं सुदेसियं पसत्थं ☆☆☆ **बितियं संवरदारं समत्तंत्तिबेमि ।२५॥ दारं २(७) ॥ जंबू ! दत्तमणुण्णायसंवरो नाम होति ततियं सुव्वता !** ☆☆☆ महव्वतं गुणव्वतं परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्तं

Jain Education International - 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपरिमियमणंततण्हाणुगयमहिच्छमणवयणकलुसआयाणसुनिग्गहियं सुसंजमियमणोहत्थपायनिभियं निग्गंथं णेट्ठिकं निरुत्तं निरासवं निब्भयं विमुत्तं उत्तमनरवसभपवरबलवगसुविहितजणसंमतं परमसाहुधम्मचरणं जत्थ य गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडंबदोणमुहसंवाहपट्टणासमगयं च किंचि दव्वं मणिमुत्तिसिलप्पवालकंसदूसरययवरकणगरयणमादिं पडियं पम्हुट्ठं विप्पणट्ठं न कप्पति कस्सति कहेउं वा गेण्हिउं वा अहिरन्नसुवन्निकेण समलेट्ठुकंचणेणं अपरिग्गहसंवुडेणं लोगंमि विहरियव्वं, जंपिय होज्जाहि दव्वजातंखलगतं खेत्तगतं रन्न(जलथलगयं खेत्त पा०)मंतरगतं वा किंचि पुप्फफलतयप्पवालकंदमूलतणकट्ठसक्करादि अप्पं च बहुं च अणुं च थूलगं वा न कप्पति उग्गहंमि अदिण्णंमि गिण्हिउं जे, हणि २ उग्गहं अणुन्नविय गेण्हियव्वं वज्जेयव्वो य सव्वकालं अचियत्तघरप्पवेसो अचियत्तभत्तपाणं अचियत्तपीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपत्तकंबलदंडगरयहरणनिसेज्जचोलपट्टगमुहपो- त्तियपायपुंछणाइ भायणभंडोवहिउवकरणं परपरिवाओ परस्स दोसो परववएसेणं जं च गेण्हइ परस्स नासेइ(सो)जं च सुकयं दाणस्स य अंतरातियं दाणविप्पणासो पेसुन्नं चेव मच्छरितं च, जेविय पीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबलमुहपोत्तियपायपुंछणादिभायणभंडोवहिउवकरणं असंविभागी असंगहरुती तवतेणे य वइतेणे य रूवतेणे य आयारे चेव भावतेणे य सद्दकरे झञ्झकरे कलहकरे वेरकरे विकहकरे असमाहिकरे सया अप्पमाणभोती सततं अणुबद्धवेरे य निच्चरोसी से तारिसए नाराहए वयमिणं, अह केरिसए पुणाइं आराहए वयमिणं ?, जे से उवहिभत्तपाणसंगहणदाणकुसले अच्चंतबालदुब्बलगिलाणवुड्ढखमके पवत्तिआयरिउवज्झाए सेहे साहम्मिके तवस्सीकुलगणसंघचेइयट्ठे य निज्जरट्ठी वेयावच्चं अणिस्सियं दसविहं बहुविहं करेति, न य अचियत्तस्स गिहं पविसइ न य अचियत्तस्स गेण्हइ भत्तपाणं न य अचियत्तस्स सेवइ पीढफलगसेज्जासंथारगवत्थपायकंबलडंडगरयहरणनिसेज्जचोलपट्ट- मुहपोत्तियपायपुच्छणाइभायणभंडोवहिउवगरणं न य परिवायं परस्स जंपति ण यावि दोसे परस्स गेण्हति परववएसेरवि न किंचि गेण्हति न य विपरिणामेति कंचि जणं न यावि णासेति दिन्नसुकयं दाऊण य न होइ पच्छातावए संभागसीले संगहोवग्गहकुसले से तारिसते आराहते वयमिणं, इमं च परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहितं पेच्चाभावितं आगमेसिभद्दं सुद्दं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसमणं, तस्स इमा पंच भावणातो ततियस्स वयस्स होंति परदव्वहरणवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए, पढमं देवकुलसभप्पवावसहरुक्खमूलआरामकंदरागरगिरिगुहाकम्मउज्जाणजाणसालाकुवितसालामंडवसुन्नघरसुसाणलेण आवणे अन्नंमि य एवमादियंमि दगमट्टियबीजहरिततसपाणअसंसत्ते अहाकडे फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्वं, आहाकम्मबहुले य जे से आसितसंमज्जिउस्सित्तसोहियछायण(प्र० छगण)दूमणलिंपणअणुलिंपणजलणभंडचालणे अंतो बहिं च असंजमो जत्थ वट्टती संजयाण अट्ठा वज्जेयव्वो हु उवस्सओ से तारिसए सुत्तपडिकुट्ठे, एवं विवित्तवासवसहिसमितिजोगेर भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरतो दत्तमणुन्नायओग्गहरुती, बितीयं आरामुज्जाणकाणणवणप्पदेसभागे जं किंचि इक्कडं व कढिणगं च जंतुगं च परामेरकुच्चकुसडब्भपलालमूयगवक्कयपुप्फ- फलतयप्पवालकंदमूलतणकट्ठसक्करादी गेण्हइ सेज्जोवहिस्स अट्ठे न कप्पए उग्गहे अदिन्नंमि गिण्हेउं जे हणि २ उग्गहं अणुन्नविय गेण्हियव्वं एवं उग्गहसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरते दत्तमणुन्नायओग्गहरुती, ततीयं पीढफलगसेज्जासंथारगट्ठयाए रुक्खा न छिंदियव्वा नवि छेदणेण भेयणेण सेज्जा कारेयव्वा जस्सेव उवस्सते वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा न य विसमं समं करेज्जा न य निवायपवायउस्सुगत्तं न डंसमसगेसु खुभियव्वं अग्गी धूमो न कायव्वो, एवं संजमबहुले संवरबहुले संवुडबहुले समाहिबहुले धीरे काएण फासयंतो सययं अज्झप्पज्झाणजुते समिए एगे चरेज्ज धम्मं, एवं सेज्जासमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरते दत्तमणुन्नायउग्गहरुती, चउत्थं साहारणपिंडपातलाभे भोत्तव्वं संजएण समियं न सायसूयाहिकं न खद्धं ण वेगितं न तुरियं न चवलं न साहसं नय परस्स पीलाकरं सावज्जं तह भोत्तव्वं जह से ततियवयं न सीदति साहारणपिंडवायलाभे सुहुमं अदिन्नादाण (विरमणवयनियमणं, वयनियमवेरमणं पाठ) एवं साहारणपिंडवायलाभे समितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरते दत्तमणुन्नायउग्गहरुती,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमगं साहम्मिए विणओ पउंजियव्वो उवकरणपारणासु विणओ पउंजियव्वो वायणपरियट्टणासु विणओ पउंजियव्वो दाणगहणपुच्छणासु विणओ पउंजियव्वो निक्खमणपवेसणासु विणओ पउंजियव्वो अन्नेसु य एवमादिसु बहुसु कारणसएसु विणओ पउंजियव्वो, विणओवि तवो तवोवि धम्मो तम्हा विणओ पउंजियव्वो गुरूसु साहूसु तवस्सीसु य, एवं विणतेण भाविओ भवइ अंतरप्पा णिच्चं अधिकरणकरणकारावणपावकम्मविरते दत्तमणुन्नायउग्गहरुई, एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुपणिहियं एवं जाव आघवियं सुदेसितं पसत्थं। ☆☆☆ **ततियं संवरदारं समत्तंत्तिबेमि।२६॥ द्वारं ३(८) ॥ ☆☆☆ जंबु!** एत्तो य बंभचेरं उत्तमतवनियमणाणदंसणचरित्तसम्मत्तविणयमूलं यमनियमगुणप्पहाणजुत्तं हिमवंतमहंततेयमंतं पसत्थगंभीरअतुच्छथिमितमज्झं अज्जवसाहुजणाचरितं मोक्खमग्गं विसुद्धसिद्धिगतिनिलयं (१३३) सासयमव्वाबाहमपुणब्भवं पसत्थं सोमं सुभं सिवमचलमक्खयकरं जतिवरसारक्खितं सुचरियं सुभासियं नवरि मुणिवरेहिं महापुरिसधीरसूरधम्मियधितिमंताण य सया विसुद्धं भव्वं भव्वजणाणुचिन्नं निस्संकियं निब्भयं नित्तुसं निरायासं निरुलेवं निव्वुतिघरं नियमनिप्पकंपं तवसंजममूलदलियणेम्मं पंचमहव्वयसुरक्खियं समितिगुत्तिगुत्तं झाणवरकवाडसुकय मज्झप्पदिन्नफलिहं सन्नद्धोच्छइयदुग्गइपहं सुगतिपहदेसगं च लोगुत्तमं च वयमिणं पउमसरतलागपालिभूयं महासगडअरगतुंबभूयं महाविडिमरुक्खक्खंधभूयं महानगरपागारकवाडफलिहभूयं रज्जुपिणिद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसंपिणद्धं जंमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्वं संभग्गमथियचुन्नियकुसल्लियपल्लट्टपडियखंडियपरिसडियविणासियं विणयसीलतवनियमगुणसमूहं तं बंभं भगवंतं गहगणनक्खत्तताराणं व जहा उडुपती मणिमुत्तिसिलप्पवालरत्तरयणागराणं व जहा समुद्दो वेरुलिओ चेव जहा मणीणं जहा मउडो चेव भूसणाणं वत्थाणं चेव खोमजुयलं अरविंदं चेव पुप्फजेट्ठं गोसीसं चेव चंदणाणं हिमवंतो चेव नगाणं बम्भी ओसहीणं सीतोदा चेव निन्नगाणं उदहीसु जहा सयंभूरमणो रुयगवरे चेव मंडलिकपव्वयाणं पवरे एरावण इव कुंजराणं सीहोव्व जहा मिगाणं पवरे पवकाणं चेव वेणुदेवे धरणो जहा पण्णगइंदराया कप्पाणं चेव बंभलोए सभासु य जहा भवे सुहम्मा ठितिसु लवसत्तमट्ठ पवरा दाणाणं चेव अभयदाणं किमिराओ चेव कंबलाणं संघयणे चेव वज्जरिसभे, संठाणे चेव समचउरंसे झाणेसु य परमसुक्कझाणं णाणेसु य परमकेवलं तु सिद्धं लेसासु य परमदुक्कलेस्सा तित्थंकरे जहा चेव मुणीणं वासेसु जहा महाविदेहे गिरिराया चेव मंदरवरे वणेसु जह नंदणवणं पवरं दुमेसु जहा जंबू सुदसणा वीसुयजसा जीय नामेण य अयं दीवो, तुरगवती गयवती रहवती नरवती जह वीसुए चेव राया रहिए चेव जहा महारहगते, एवमणेगा गणा अहीणा भवंति एक्कंमि बंभचेरगुणे जंमि य आराहियंमि आराहियं वयमिणं सच्चं सीलं तवो य विणओ य संजमो य खंती गुत्ती मुत्ती तहेव इहलोइयपारलोइयजसे य कित्ती य पच्चओ य, तम्हा निहुएण बंभचेरं चरियव्वं सव्वओ विसुद्धं जावज्जीवाए जाव सेयट्ठिसंजउत्ति, एवं भणियं वयं भगवया, तं च इमं- 'पंचमहव्वयसुव्वयमलं, समणमणाइलसाहुसुचिन्नं । वेरविरामणपज्जवसाणं, सव्वसमुद्दमहोदधितित्थं ॥१२ ॥ तित्थकरेहि सुदेसियमग्गं, नरयतिरिच्छविवज्जियमग्गं । सव्वपवित्तिसुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाणअवंगुयदारं ॥१३ ॥ देवनरिंदनमंसियपूयं, सव्वजगुत्तममंगलमग्गं । दुद्धरिसं गुणनायकमेक्कं, मोक्खपहस्स वडिंसकभूयं ॥१४ ॥ जेण सुद्धचरिएणं भवइ सुबंभणो सुसमणो सुसाहू सुइसी सुमुणी सुसंजए, स एव भिक्खू जो सुद्धं चरति बंभचेरं, इमं च रतिरागदोसमोहपवड्ढणकरं किं मज्झ(ज्ज)पमायदोसपासत्थसीलकरणं अब्भंगराणियतेल्लमज्जणाणिय अभिक्खणं कक्खासीकरचरणवदणधोवणसंवाहण गायकम्मपरिमद्दणाणुलेवणचुन्नावासधूवणसरीरपरिमंडणवाउसियहसियभणियनट्टगीयवाइयनडनट्टकज-ल्लमल्लपेच्छणवेलंबकज्जाणि य सिंगारागाराणि (प्र० रकारगाणि) य अन्नाणि य एवमादियाणि तवसंजमबंभचेरघातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं, भावेयव्वो भवइ य अंतरप्पा इमेहिं तवनियमसीलजोगेहिं निच्चकालं, किं ते ?- अण्हाणअदंतधावणसेयमलजल्लधारणं मूणवयकेसलोयखमदमअचेलगखुप्पिवासलाघवसीतो- सिणकट्ठसेज्जाभूमि निसेज्जापरघरपवेसलद्धावलद्धमाणावमाणनिंदणदंसमसगफासनियमत-वगुणविणयमादिएहिं जहा से थिरतरकं होइ बंभचेरं, इमं च अबंभचेरविरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहित्तं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विउसवणं, तस्स इमा पंच भावणाओ चउत्थवयस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होंति अबंभचेरवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए, पढमं सयणासणघरदुवारअंगण आगासगवक्खसालअभिलोयणपच्छवत्थुकपसाहणकण्हाणिकावकासा अवकासा जे य **वेसियाणं** अच्छंति य जत्थ इत्थिकाओ अभिक्खणं मोहदोसरतिरागवड्ढणीओ कहिंति य कहाओ बहुविहाओ तेऽवि हु वज्जणिज्जा इत्थीसंसत्तसंकिलिट्ठा अन्नेवि य एवमादी अवकासा ते हु वज्जणिज्जा जत्थ मणोविब्भमो वा भंगो वा भस्सणा वा अट्टं रुद्दं च हुज्ज झाणं तं तं वज्जेज्ज वज्जभीरू अणायतणं अंतपंतवसी एवमसंपत्तवासवसहीसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरतमणविरयगामधम्मे जितिंदिए बंभचेरगुत्ते, बितियं नारीजणस्स मज्झे न कहेयव्वा कहा विचित्ता विब्बोयविलाससंपउत्ता हाससिंगारलोइयकहव्व अणायतणं अन्तपन्तवासी एवमसंसत्तवासवसधी मोहजणणी न आवाहविवाहवरकहाविव इत्थीणं वा सुभगदुभगकहा चउसट्ठिं च महिलागुणा न वन्नदेसजातिकुलरूवनामनेवत्थपरिजणकहा इत्थियाणं अन्नावि य एवमादियाओ कहाओ सिंगारकलुणाओ तवसंजमबंभचेरघातोवघातियाओ अणुचरमाणेणं बंभचेरं न कहेयव्वा न सुणयव्वा न चिंतेयव्वा, एवं इत्थीकहविरतिसमितिजोगेणं भावितो भवति अंतरप्पा आरतमणविरयगामधम्मे जितिंदिए बंभचेरगुत्ते, ततीयं नारीण हसितभणितचेट्ठियविप्पेक्खितगइविलासकलियं विव्वोतियनट्टगीतवातियसरीरसंठाणवन्नकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणपयोहराधरवत्थालंकारभूसणाणि य गुज्झोवकासियाइं अन्नाणि य एवमादियाइं तवसंजमबंभचेरघातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं न चक्खुसा न मणसा न वयसा पत्थेयव्वाइं पावकम्माइं, एवं इत्थीरूवविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरतमणविरयगामधम्मे जितिंदिए बंभचेरगुत्ते, चउत्थं पुव्वरयपुव्वकीलियपुव्वसंगंथगंथसंथुया जे ते आवाहविवाह चोल्लकेसु य तिथिसु जन्नेसु उस्सवेसु य सिंगारागारचारुवेसाहिं हावभाव पललियविक्खेववियाससालिणीहिं अणुकूलपेम्मिकाहिं सद्धिं अणुभूया सयणसंपओगा उदुसुहवरकुसुमसुरभिचंदणसुगंधिवरवासधूवसुहफरिसवत्थभूसणगुणोववेया रमणिज्जाउज्जगेयपउरा नडनट्टगजल्लमल्लमुट्ठिकवेलंबगकहगपवगलासगआइक्खगलंखलंखमंखतूणइल्लतुंबवी- णियतालायरपकरणाणि य बहूणि महुरसरगीतसुस्सराइं अन्नाणि य एवमादियाणि तवसंजमबंभचेरघातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं न तातिं समणेणं लब्भा दट्ठुं न कहेउं नवि सुमरिउं जे, एवं पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरयमणविरतगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते, पंचमगं आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जते संजते सुसाहू ववगय खीरदहिसप्पिनवनीयतेल्लगुलखंडमच्छंडिकमहुमज्जामांसखज्जकज्जविगतिपरिचत्तकयाहारे ण दप्पणं न बहुसो न नितिकं न सायसूपाहिकं न खद्धं तहा भोत्तव्वं जह से जायामाता य भवति, न य भवति विब्भमो न भंसणा य धम्मस्स, एवं पणीयाहारविरतिसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरयमणविरतगामधम्मे जिइंदिए बंभचेरगुत्ते, एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुपणिहितं इमेहिं पञ्चहिवि कारणेहिं मणवयणकायपरिरक्खिएहिं णिच्चं आमरणंतं च एसो जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुन्नातो, एवं चउत्थं संवरदारं फासियं पालितं सोहितं तीरितं किट्टितं आणाए अणुपालियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं सिद्धं आघवियं सुदेसितं पसत्थं, ☆☆☆ **चउत्थं संवरदारं समत्तंतिबेमि ।२७। द्वारं ४(९) ॥ जंबू ! ☆☆☆** अपरिग्गहसंवुडे य समणे आरंभपरिग्गहातो विरते विरते कोहमाणमायालोभा एगे असंजमे दो चेव रागदोसा तिन्नि य दंडगारवा य गुत्तीओ तिन्नि तिन्नि य विराहणाओ चत्तारि कसाया झाणासन्नाविकहा चउरो पंच य किरियाओ समिति इंदियमहव्वयाइं च छ जीवनिकाया छच्च लेसाओ सत्त भया अट्ठ य मया नव चेव य बंभचेरवयगुत्ती दसप्पकारे य समणधम्मे एक्कारस य उवासकाणं बारस य भिक्खूणं पडिमा किरियठाणा य भूयगामा परमाधम्मिया गाहासोलसया असंजमअबंभणाअसमाहिठाणा सबला परिसहा सूयगडज्झयणदेवभावणउद्देसगुणपकप्पपावसुतमोहणिज्जे सिद्धातिगुणा य जोगसंगहे तित्तीसा आसातणा सुरिंदा आदिं एक्कातियं करेत्ता एक्कुत्तरियाए कड्ढीए तीसातो जाव उ भवे तिकाहिका विरतीपणिहीसु अविरतीसु य एवमादिसु बहूसु ठाणेसु जिणपसत्थेसु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्ठिएसु संकं कंखं निराकरेत्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्दहते सासणं भगवतो अणियाणे अगारवे अलुद्धे अमूढमणवयणकायगुत्ते। २८। जो सो वीरवरवयणविरतिपवित्थरबहुविहप्पकारो सम्मत्तविसुद्धमूलो धितिकंदो विणयवेतितो निग्गततिलोक्कविपुलजसनिविड(प्र० चित)पीणपवरसुजातखंधो पंचमहव्वयविसालसालो भावणतयंतज्झाणसुभजोगनाणपल्लववरंकुरधरो बहुगुणकुसुमसमिद्धो सीलसुगंधो अणण्हवफलो पुणो (प्र० पुणोवि) य मोक्खवरबीजसारो मंदरगिरिसिहरचूलिका इव इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स सिहरभूओ संवरवरपादपो चरिमं संवरदारं, जत्थ न कप्पइ गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमगयं च किंचि अप्पं व बहुं व अणुं व थूलं व तसथावरकायदव्वजायं मणसावि परिघेत्तुं ण हिरन्नसुवन्नखेत्तवत्थुं न दासीदासभयकपेसहयगयगवेलगकंबलजाणजुग्गसयणासणाइ ण छत्तकं न कुंडिता न उवाणहा न पेहुणवीयणतालियंटकाण यावि अयतउयतंबसीसक- कंसरयतजातरूवमणिमुत्ताधारपुडकसंखदंतमणिसिंगसेल(लेस पा०)कायवरचेलचम्मपत्ताइं महरिहाइं परस्स अज्झोववायलोभजण(प्र० कर)णाइं परियड्ढेउं गुणवओ न यावि पुप्फफलकंदमूलादियाइं सणसत्तरसाइं सव्वधन्नाइं तीहिवि जोगेहिं परिघेत्तुं ओसहभेसज्जभोयणट्ठयाए संजएणं, किं कारणं ?, अपरिमितणाणदंसणधरेहिं सीलगुणवियणतवसंजमनाकेहिं तित्थयरेहिं सव्वजगज्जीववच्छलेहिं तिलोयमहिएहिं जिणवरिंदेहिं एस जोणी जंगमाणं दिट्ठा न कप्पइ जोणिसमुच्छेदोत्ति तेण वज्जंति समणसीहा, जंपिय ओदणकुम्मासगंजतप्पण- (प्र० लगण)मंथुभुज्जियपललसूपसक्कुलिवेढिमव(प्र० वे)सरकचुन्नकोसगपिंडसिहरिणिवट्टमोयगखीरदहिसप्पिनवनीततेल्लगुलखंडमच्छंडियमधुमज्जगंसखज्जकवंजणाविधिमादिकं पणीयं उवस्सए परघरे व रन्ने न कप्पती तंपि सन्निहिं काउं सुविहियाणं, जंपिय उद्दिट्ठठवियरचियगपज्जवजातं पकिण्णपाउकरणपामिच्चं मीसकजायं कीयकडपाहुडं च दाणट्ठपुन्नपगडं समणवणीमगट्ठयाए व कयं पच्छाकम्मं पुरेकम्मं निच्चकम्मं मक्खियं अतिरित्तं मोहरं चेव सयग्गहमाहडं मट्टिओवलित्तं अच्छेज्जं चेव अणीसट्ठं जं तं तिहिसु जन्नेसु ऊसवेसु य अंतो व बहिं व होज्ज समणट्ठयाए ठवियं हिंसासावज्जसंपउत्तं न कप्पती तंपिय परिघेत्तुं, अह केरिसयं पुणाइ कप्पति ?, जं तं एक्कारसपिंडवायसुद्धं किणणहणणपयणकयकारियाणुमोयणनवकोडीहिं सुपरिसुद्धं दसहि य दोसेहिं विप्पमुक्कं उग्गमउप्पायणेसणाए सुद्धं ववगयचुयचवियचत्तदेहं फासुयं ववगयसंजोगमणिंगालं विगयधूमं छट्ठाणनिमित्तं छक्कायपरिरक्खणट्ठा हणि २ फासुकेण भिक्खेण वट्टियव्वं, जंपिय समणस्स सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि समुप्पने वाताहिकपित्तसिंभअतिरित्तकविय तह सन्निवातजाते व उदयपत्ते उज्जलबलविउलतिउलकक्खडपगाढदुक्खे असुभकडयफरुसे चंडफलविवागे महब्भए जीवियंतकरणे सव्वसरीरपरितावणकरे न कप्पती तारिसेवि तह अप्पणो परस्स वा ओसहभेसज्जं भत्तपाणं च तंपि संनिहिकयं, जंपिय समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवति भायणभंडोवहिउवकरणं पादबंधणं पादकेसरिया पादठवणं च पडलाइं तिन्नेव रयत्ताणं च गोच्छओ तिन्नेव य पच्छाका रयोहरणचोलपट्टकमुहणंतकमादीयं एयंपिय संजमस्स उववूहणट्ठयाए बायायवदंसमगसीयपरिक्खणट्ठयाए उवगरणं रागदोसरहियं परिहरियव्वं संजएणं णिच्चं पडिलेहणपप्फोडणपमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सततं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायणभंडोवहिउवकरणं, एवं से संजते विमुत्ते निस्संगे निप्परिग्गहरुई निम्ममे निन्नेहबंधणे सव्वपावविरते वरसीचंदणसमाणकप्पे समतिमणिमुत्तालेट्ठुकंचणे मे य माणावमाणणाए समियरते समितरागदोसे समिए समितीसु सम्मद्दिट्ठी समे य जे सव्वपाणभूतेसु ससे हु समणे सुयधारते उज्जुते संजते स साहू सरणं सव्वभूयाणं सव्वजगवच्छले सच्चभासके य संसारंतट्ठिते य संसारसमुच्छिन्ने सततं मरणाणुपारते पारगे य सव्वेसिं संसयाणं पवयणमायाहिं अट्ठहिं अट्ठकम्मगंठीविमोयके अट्ठमयमहणे ससेमयकुसले य भवति सुहदुक्खनिव्विसेसे अब्भितरबाहिरंमि सया तवोवहाणंमि य सुट्ठज्जुते खंते दंते य हिय(धिति पा०)निरते ईरियासमिते भासासमिते एसणासमिते आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिते उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिते मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू धन्ने तवस्सी खंतिमगे जितिंदिए सोधिए अणियाणे अबहिल्लेस्से अममे अकिंचणे छिन्नगंथे (सोए पा०) निरुवलेवे सुविमलवरकंसभायणंव मुक्कतोए संखेविव निरंजणे विगयरागदोसमोहे कुम्मोइव इंदिएसु गुत्ते जच्चकंचणगंव जायरूवे पोक्खरपत्तंव निरुवलेवे चंदो इव सोमत्ताए (भावयाए पा०) सुरोव्व दित्ततेए अचले जह मंदरे गिरिवरे अक्खोभे सागरोव्व थिमिए पुढवीव सव्वफाससहे तवसा च्चिय(प्र० इव)भासरासिछन्निव्व जाततेए जलियहुयासणोविव तेयसा जलंते गोसीसचंदणंपिव

Jain Education International - 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीयले सुगंधे य हरएविवसमियतावे उग्घोसियसुनिम्मलंव आयंसमंडलतलंव पागडभावेण सुद्धभावे सोंडीरे कुंजरोव्व वसभेव्व जायथामे सीहेवा जहा मिगाहिवे **होंति दुप्पधरिसे सारयसलिलंव सुद्धहिययेभारंडे** चेव अप्पमत्ते खग्गिविसाणंव एगजाते खाणुं चेव उड्ढकाए सुन्नगारेव्व अप्पडिकम्मे सुन्नागारावणस्संतो **निवायसरणप्पदीपज्झाणमिव** निप्पकंपे जहा खुरो चेव एगधारे जहा अही चेव एगदिट्ठी आगासं चेव निरालंबे विहगेविव सव्वओ विप्पमुक्के कयपरनिलए जहा चेव उरए अप्पडिबद्धे अनिलोव्व ज़ीवोज्ञ अप्पडिहयगती गामे एकरायं नगरे य पंचरायं० दूइज्जंते य जितिंदिए जितपरीसहे निब्भओ विऊ (सुद्धो पा०) सच्चित्ताचित्तमीसकेहिं दव्वेहिं विरायं गते संचयातो विरए मुत्ते लहुके निरवकंखे जीवियमरणासभयविप्पमुक्के निस्संधिं निव्वणं चरित्तं धीरे काएण फासयंते सततं अज्झप्पज्झाणजुत्ते निहुए एगे चरेज्ज धम्मं, इमं च परिग्गहवेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभद्दं सुद्ध नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विओसमणं, तस्स इमा पंच भावणाओ चरिमस्स वयस्स होंति परिग्गहवेरमणरक्खणट्ठयाए-पढमं सोइंदिएण सोच्चा सद्दाइं मणुन्नभद्दगाइ, किं ते ?, वरमुरयमुइंगपणवदद्दुरकच्छभिवीणाविपंचीवल्लयिवद्धीसकसुघोसनंदिसुसरपरिवादिणि-वंसतूणकपव्वकतंतीतलताल-तुडियनिग्घोसगीयवाइयाइं नडनट्टकजल्लमल्लमुट्ठिकवेलंबककहकपवककलासगआइक्खकलंखमंखतूण-इल्लतुंबवीणियतालायरपकरणाणि य बहूणि महुरसरगीतसुस्सराति कंचीमेहलाकलावयत्तरकपहेरकपायजालगघंटियखिंखिणिरयणोरूजालियछुद्दियनेउ-रचलणमालियकणगनियलजालभूसणसद्दाणि लीलाचंकम्ममाणाणुदीरियाइं तरूणीजणहसियभत्रणियकलरिभितमंजुलाइं गुणवयणाणि व बहूणि महुरजणभासियाइं अन्नेसु य एवमादिएसु सद्देसु मणन्नभद्दएसु णं तेसु समणेणं सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न गिज्झियव्वं न मुज्झियव्वं न विनिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि सोइंदिएण सोच्चा सद्दाइं अमणुन्नपावकाइं, किं ते ?, अक्कोसफरूसखिसणअवमाणणतज्जणनिब्भंछणदित्तवयणता-सणउक्कूजियरूत्ररडियकंदियनिग्घुट्ठरसियकलुणविलवियाइं अन्नेसु य एवमादिएसु सद्देसु अमणुण्णपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिंसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं नवहेयव्वं न दुगुंछावत्तियाए लब्भा उप्पाएउं, एवं सोतिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा मणुन्नामणुन्नसुब्भिदुब्भिरागदोसप्पणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए चरेज्जं धम्मं, बितियं चक्खिंदिएणं पासिय रूवाणि मणुन्नाइं भद्दकाइं सचित्ताचित्तमीसकाइं कट्ठे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे सेले य दंतकम्मे य पंचहिं वण्णेहिं अणेगसंठाणसंथियाइं गंठिमवेढिमपूरिमसंघातिमाणि य मल्लाइं बहुविहाणि य अहियं नयणमणसुहकराइं वणसंडे पव्वते य गामागरनगराणि य खुद्दियपुक्खरिणिवावीदीहियगुंजालियसररपंतियसागरबिलपंतियखादिय-नदीसरतलागवप्पिणीफुल्लुप्पलपउमसंडपरिमंडियाभिरामे अणेगसउणगणमिहुणविचरिए वरमंडवविविहभवणतोरणचेतियदेवकुलसभप्पवावहसुकय-सयणासणसीयरहसयडजाणजुग्गसंदणनरनारीगणे य सोमपडिरूवदरिसणिज्जे अलंकितविभूसिते पुव्वकयतवप्पभावसोहग्गसंपउत्ते नडनट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंगबगकहगपगलासगआइक्खगलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियतालायरपकरणाणि य बहूणि सुकरणाणि अन्नेसु य एवमादिएसु रूवेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेणं सज्जियव्वं न रज्जियव्वं जाव न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि चक्खिंदिएण पासिय रूवाइं अमणुन्नपावकाइं, किं ते ?, गंडिकोढिककुणिउदरिकच्छुल्लपइल्लकुज्जपंगुलवामणअंधिल्लगएगचक्खुविणिहय (पीढ) सप्पिसल्लगवाहिरोपीलियं विगयाणि य मयककलेवराणि सकिमिणकुहियं च दव्वरासिं अन्नेसु य एवमादिएसु अमणुन्नपावतेसु न तेसु समणेणं रूसियव्वं जाव न दुगंछावत्तियावि लब्भा उप्पातेउं. एवं चक्खिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्प जाव चरेज्ज धम्मं, ततियं घाणिंदिएणं अग्घाइय गंधाति मणुन्नभद्दगाइ, किं ते ?, जलयथलयसरसपुप्फफलपाणभोयणकुट्ठतगरपत्तचोदद-मणकमरूयएलारसपिक्कमंसिगोसीससरसचंदणकप्पूरलवंगअगरकुंकुमकक्कोलउसीरसेयचंदणसुगन्धसारंगजुत्तिवरधूववासे उउयपिंडिमणिहारिमगंधिएसु अन्नेसु य एवमादिएसु गंधेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं जाव न सतिं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि घाणिंदिएण अग्घातिय गंधाणि अमणुन्नपावकाइं, किं ते ?,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिमडअस्समडहत्थिमडगोमडविगसुणगसियालमणुयमज्जारसीहदीवियमयकुहियविणट्ठकिविणबहुदुरभिगंधेसु अन्नेसु य एवमादिएसु गंधेसु अमणुन्नपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं जाव पणिहियपंचिदिएचरेज्ज धम्मं, चउत्थं जिब्भिंदिएण साइय रसाणि उ मणुन्नभद्दकाइं, किं ते ?, उग्गाहिमविविहपाणभोयणगुलकयखंडकयतेल्लघयकयमक्खेसु बहुविहेसु लवणरससंजुत्तेसु महुमंसबहुप्पगारमज्जियनिट्ठाणगदालियंबसेहंबुदुद्धदहिसरयवज्जवरवारूणीसीहुकाविसायणसायट्ठारसबहुप्पगारेसु भोयणेसु य मणुन्नवन्नगंधरसफासबहुदव्वसंभितेसु अन्नेसु य एवमादिएसु रसेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं जाव न सइं च मतिं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि जिब्भिंदिएण सायिय रसातिं अमणुन्नपावगाइं, किं ते ?, अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्पपाणभोयणाइं दोसीणवावन्नकुहियपूइयअमणुन्नविणट्ठपसूयबहुदुब्भिगंधियाइं तित्तकडुयकसायअंबिलरसलिंडनीरसाइं अन्नेसु य एवमातिएसु रसेसु अमणुन्नपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं जाव चरेज्ज धम्मं, पंचमगं फासिंदिएण फासिय फासाइं मणुन्नभद्दकाइं, किं ते ?, दगमंडवहारसेयचंदणसीयलविमलजलविविहकुसुमसत्थरओसीरमुत्तियमुणालदोसिणापेहुणउक्खेवगतालियंटवीयणगजणियसुहसीयले य पवणे गिम्हकाले सुहफासाणि य बहूणि सयणाणि य पाउरणगुणे य सिसिरकाले अंगारपतावणा य आयवनिद्धउसीयउसिणलहुया य जे उदुसुहफासा अंगसुहनिव्वइकरा ते अन्नेसु य एवमादितेसु गिज्झियव्वं न फासेसु मणुन्नमद्दएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न मुज्झियव्वं न मुच्छियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न अज्झोववज्जियव्वं न तूतियव्वं न हसियव्वं न सतिं च मतिं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि फासिदिएण फासिय फासातिं अमणुन्नपावकाइं. किं ते ?. अणेगवधबंधतालणतज्जणअतिभाररोवणए अंगभंजणसूतीनखप्पवेसगायपच्छायणलक्खारसखारतेल्लकलकलंततउअसीसककाललोहसिंचणहडिबंधरज्जुनिगलसंकलहत्थंडुयकुंभिपाकदहणसीहपुच्छण- उब्बंधणसूलभेयगयचलणमलणकरचरणकन्ननासोट्ठसीसछेयणजिब्भंछणवसणनयणहिययदंतभंजणजोत्तलयकसप्पहारपादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविच्छुअगाणि विच्छुयडक्कवायातवदंसमसकनिवाते दुट्ठणिसेज्जणिसीहियदुब्भिकक्खडगुरूसीयउसिणलुक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य एवमाइएसु फासेसु अमणुन्नपावकेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्व न निदियव्व न गरहियव्वं न खिसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तियं च लब्भा उप्पाएउं, एवं फासिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा अमणुन्नामणुन्नसुब्भिअसुब्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संवुडे पणिहितिंदिए चरिज्ज धम्मं। एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिवि कारणेहिं मणवयकायपरिरक्खिएहिं निच्चं आमरणंतं च एस जोगो नेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिद्दो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुन्नातो. एवं पंचमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्टियं अणुपालियं आणाए आराहियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं। **☆☆☆ पंचमं संवरदारं समत्तंतिबेमि ॥ द्वारं ५ (१०) ॥☆☆☆** एयातिं वयाइं पंचवि सुव्वयमहव्वयाइं हे उसयविचित्तपुक्खलाइं कहियाइं अरिहंतसासणे पंच समाणेण संवरा वित्थरेण उ पणवीसतिसमियसहियसंवुडे सया जयणघडणसुविसुद्धदंसणे एए अणुचरिय संजते चरमसरीरधरे भविस्सतीति। २९। पण्हावागरणे णं एगो सुयक्खंधो दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति एगंतरेसु आयंबिलेसु निरूद्धेसु आउत्तभत्तपाणएणं अंगं जहा आयारस्स।३०॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org